* त्रय्यन्तगुरवे भगवतेभाष्यकाराय नमः *

‡ वेदान्तवेद्याय परस्मैपुंसे श्रीजानकीनाथायनमः ‡

रहस्यत्रयभाष्यम्

निखिलतन्त्र स्वतन्त्र प्रतिवादिभीकर श्रीरामान-
न्दीयान्वय श्रीरामप्रसादवंशोद्भवयोगिवर्य
मणिरामवन्धुभिः प्रकांडविद्वद्भिः
श्रीमद्धरिदासाचार्यवर्य्यैः
सम्पादितम्।

तदेतत्

श्रीमद्योगानन्दाचार्यवंशोद्भवैः श्रीयुत
पं० रामवल्लभाशरणैः
भाषाटीकया समलंकृतं।

अयोध्यास्थ श्रीसीतारामसुद्रणालये गिरिजा-
दयालुना मुद्रयित्वाप्रकाशितंच।

तच्च सं० १९८६ आषाढ शुक्ल पूर्णिमायाम् च
सम्पन्नमिति।

प्रथमावृत्तिः १०००

1620

* श्रीमतेभगवते रामानन्दायनमः *

रहस्यत्रयम् ।

श्रीरामाख्यं परंब्रह्म नत्वा श्रीजानकी धवम् ।
कुर्वे श्रीराममन्त्रस्य व्याख्यानं श्रौतमुत्तमम् ॥

श्रीजानकी पति श्रीरामाख्य परब्रह्म को नमस्कार कर श्रीराममन्त्र का उत्तम श्रौत ब्याख्यान मैं करता हूँ ।

सर्वे इतिहास पुराणादयश्च परमात्मस्वरूपम् । जीवात्मस्वरूपम् परमात्मप्राप्त्युपायम्प्राप्तेः फलम् तद्विरोधिनश्च बदन्तीत्युक्तमभियुक्तैः ॥

समस्त इतिहास पुराणादि परमात्मस्वरूप जीवात्मस्वरूप परमात्मा के प्राप्ति का उपाय प्राप्ति का फल प्राप्तिके विरोधियों का स्वरूप वर्णन करते हैं । यह अभियुक्त लोगों ने कहा है ।

तद्यथाह प्राप्यस्य ब्रह्मणोरूपं प्राप्तुश्च प्रत्यगात्मनः प्राप्त्युपायं फलं प्राप्तेस्तथा प्राप्तिविरोधिनः । वदन्ति सकलावेदाः सेतिहासपुराणकाः । मुनयश्चमहात्मानो वेदवेदाङ्ग वेदिनः ॥

प्राप्य जो ब्रह्म उसका स्वरूप तथा प्राप्ता जो जीवात्मा तिसका स्वरूप एवं परमात्मा के प्राप्ति का उपाय और प्राप्ति के फल का स्वरूप तथा प्राप्ति के विरोधियों का स्वरूप इन्हीं ५ अर्थों को इतिहास पुराण के सहित समस्त वेद तथा महात्मा मुनि गण वर्णन करते हैं । जो कि वेदवेदाङ्ग के जानने वाले हैं ।

एतेच पञ्चार्थाः सर्ब वेदादि कारणस्य श्री राममंत्रस्यार्थाः इत्युप्युक्त मभियुक्तैः प्राप्यस्य ब्रह्मणोरूपं प्राप्तुश्च प्रत्यगात्मनः प्राप्त्युपायं फलं प्राप्तेस्तथा प्राप्ति विरोधि च ज्ञातव्य मेतदर्थापंचकं मंत्रवित्तमैः ।

प्राप्य स्वरूप प्राप्ता का स्वरूप प्राप्तिका उपाय

तथा फल और विरोधी इन ५ अर्थों को मंत्र के जानने वालों को अवश्य जानना चाहिये ।

अनधीत वेदादिरपि मंत्रार्थ ज्ञानेन वेदार्थ ज्ञ सन् प्राप्यादि स्वरूप ज्ञान पूर्वकं तदनुसन्धान सहित तत्प्राप्त्युपायेन श्रीरामाख्यं परंब्रह्म प्राप्स्यतीत्येवम् राममंत्रस्य षडक्षरस्यार्थोबर्ण्यते ।

वेदादि को न पढ़ कर भी केवलमंत्रार्थ ज्ञान से ही वह साधक वेदार्थज्ञ होकर आत्म परमात्म स्वरूप ज्ञान पूर्वक मंत्रार्थानुसन्धान सहित मंत्र जप करते हुए इसी उपाय से श्रीरामाख्य परब्रह्म को प्राप्त होगा यह इस तरह षडक्षर श्रीराम मंत्र का अर्थ वर्णन किया जाता है ।

वेदानां सर्ब मंत्राणांचकारण भूतो राममंत्रस्यादिमोक्षरो रेफ इति पुलस्त्य संहितायामुक्तम् ।

सर्व वेद तथा सर्व मंत्रो का कारण भूत रेफ है वह श्रीराम मंत्र का पहिला अक्षर है यह पुलस्त्य संहिता म लिखा है ।

बीजे यथास्थितो वृक्षः शाखापल्लव संयुतः तथैव सर्बे वेदाहि रकारे सुव्यवस्थिताः। यथा करंडे रत्नानि गुप्तान्यज्ञैर्नदृश्यते। तद्वन्मंत्राश्च वेदाश्च रकारे सुव्यवस्थिताः॥

जिस तरह शाखा पल्लव संयुक्त महान वृक्ष एक छोटे बीज में रहता है इसी तरह समस्त वेद और मंत्र रकार में स्थित हैं जिस प्रकार डब्बा में रक्खे हुए रत्न अज्ञानी को नहीं देख पड़ते हैं इसी तरह मंत्र और सब वेद रकार में स्थित हैं पर उसके तत्व के न जानने वालेको नहीं देख पड़ते हैं।

विश्वं चराचरं सर्वमवकाशेन नित्यशः आदावन्ते तथा मध्ये रकारे सुव्यवस्थितमित्यादिना सर्ववेद कारणस्योंकारस्यापि कारणत्वेन सर्बेषां वेदानां सर्वमन्त्राणां च कारण भूतोयं षडक्षरः श्रीराममन्त्रः॥

यह सचराचर विश्व अवकाश के साथ आदि में

और मध्य में तथा अन्त में रकार ही में नित्यशः व्यवस्थित है इत्यादि प्रमाण से सर्व वेदों का कारण जो ओंकार तिसका भी कारण होनेसे समस्त वेद और मन्त्रोंका कारण भूत यह षडक्षर राम मन्त्र है ।

राममन्त्रस्योंकार कारणत्वं रामतापिनीयोपनिषत् स्पष्टरूपेण वदति तदेवं राममन्त्रस्योंकार कारणत्वं सर्ववेदकारणत्वं सर्वमन्त्रकारणत्वञ्च चराचर जगतकारणत्वञ्च संक्षेपेण प्रदृश्य मन्त्रस्यार्थ वर्णनेनोक्तार्थाःस्फुटी क्रियते तत्रादौ मन्त्रार्थ पराश्रीरामतापिनीयाश्रुतिः ॥

श्रीराम मन्त्र ओंकार का कारण है यह श्रीरामतापिनीय की श्रुति स्पष्ट रूप से कहती है इस तरह राम मन्त्र ओंकार का कारण है और सर्व वेद सर्वमन्त्र सम्पूर्ण चराचर जगतका कारण है यह संक्षेप से दिखा कर मन्त्रार्थ वर्णन करने से स्पष्ट किया जाता है । प्रथम राममन्त्र परा श्रीरामतापिनी की श्रुति है ।

क्रियाकर्मेज्य कर्तृणामर्थों मन्त्रोवदत्यथ

मननात्त्राणनान्मंत्रः सर्ववाच्यस्य वाचकः अ-स्यार्थः क्रियामनोव्यापारात्मिका रामप्राप्तेरु-पायः श्रीरामएवेत्येतदर्थानुसन्धानलक्षणा कर्म मन्त्रगतचतुर्थीविभक्तिवोध्यं भगवत्कैंकर्य्यल-क्षणं इज्यः उक्तेन कर्मणापूज्यः मन्त्रवाच्यः श्रीरामः कर्ता ईज्यपद सान्निध्यात् ईज्य भूत श्रीराम कैंकर्य्य लक्षणस्य कर्मणः कर्ता तच्छे-षत्वं प्राप्तोजीवः ॥

क्रिया कर्म ईज्य कर्ता इन तीनों के अर्थ को मन्त्र कहता है मनन करनेसे जो त्राण नाम रक्षा करै उसे मन्त्र कहते हैं यह मन्त्र सर्ववाच्य वस्तु का वाचक है यह श्रुति है इसका अर्थ यह है साधकके मनका जो व्यापार अर्थात् श्रीराम जी के प्राप्ति के उपाय श्रीराम जी ही हैं ऐसा अनु-सन्धान करना यह क्रिया है। कर्म मन्त्र में जो चतुर्थी विभक्ति वोध्य भगवत कैंकर्य्य ईज्य उक्त कर्म से पूज्य श्रीराम जी जो मन्त्र वाच्य देवता रूप हैं वे ही ईज्य हैं कर्ता ईज्य पद के सान्निध्य से पूज्य भूत श्रीराम कैंकर्य्य

लक्षण कर्म का करनेवालारामजीका शेष भूत जीव है

एषां क्रियादीनामर्थं वाच्यं प्रयोजनं वा मन्त्रोबदति तस्यमन्त्रार्थस्य मननात् त्राणान्मन्त्रः मन्त्रार्थानुसन्धात्तारं त्रायते रक्षतीति मन्त्रः इतिश्रुत्यनुकूलनिरुक्तेश्चोक्तोर्थोनिष्पन्नः कीदृशोमन्त्रः सर्ववाचस्य वाचकः सर्वशब्द वाच्यस्य श्रीरामस्य मुख्यवाचकः ॥

इन सब क्रिया कर्म ईज्योंके अर्थ को अर्थात वाच्य वा प्रयोजन को मन्त्र कहता है तिस मन्त्रार्थ के मनन करनेवाले की जो रक्षा करे उसे मन्त्र कहते हैं यह श्रुति के अनुकूल मन्त्र शब्द का अर्थ हैं वह मन्त्र कैसा है सर्व वाच्य का वाचक है अर्थात सर्व शब्द वाच्य जो श्री रामजी उनका वाचक है ।

सर्व शब्दान्तर्गतत्वेन राममंत्रस्य सर्व वाच्यस्येत्युक्त्यैव रामवाचकत्व निष्पत्तेः पुनः सर्व वाच्यस्य वाचक इति सर्व शब्देभ्यः पृथक् कृत्य

तस्य रामवाचकत्व कथन मन्यथानुपपद्यमानं तस्य मुख्य बाचकत्वं ज्ञापयति सर्व शब्दवाच्य स्वं तु रामस्य सर्व ब्यापकत्त्वेन सर्व शरीरित्त्वा दुपपद्यते ।

श्रीराम मंत्रको सर्व शब्द के अन्तर्गत होने से सर्व वाच्यस्य यह कहने से ही राम वाचकत्व सिद्ध होगया पुनः सर्व वाच्यस्य वाचकः यह वाक्य सर्व शब्द से पृथक् कर राम वाचकत्व कथन अन्यथा उपपद्यमान न होकर तिसको मुख्य वांचकत्व जनाता है रामजी का सर्व शब्द वाच्यत्व सर्व ब्यापक होने से सर्व शरीरी हैं इसी से सिद्ध होगया ।

रामस्य सर्व ब्यापकत्वं रामतापनीयश्रुत्योक्तं सर्वब्यापीराघवो यस्तदानी मंतर्दधे इति सर्वजगच्छरीरित्वं महर्षिणाश्रीमद्रामायणेचोक्तं जगत् सर्वशरीरंते इति अन्तर्यामिश्रुतयोपिपरमात्मनः सर्व शरीरित्वं वदंति यःपृथव्यां तिष्ठंन्नित्याःरभ्य यस्य पृथ्वी शरीरं यस्यतेजः शरीरं

यस्य सर्वाणि भूतानि शरीरमित्यन्ताः श्रुतयः ।

श्रीरामजी का सर्वव्यापकत्व रामतापनीय श्रुति से सिद्ध है वह श्रुति यह है सर्वव्यापी राघवो इत्यादि महर्षि श्री बाल्मीकि जी ने भी जगत् सर्वं शरीरं ते यह कहकर रामजी को सर्व शरीरी बतलाया यः पृथिव्यां तिष्ठन् इत्यादि आरम्भ कर यस्य सर्वाणि भूतानि शरीरं यह कहकर अन्तर्यामि श्रुतियां भी श्रीरामजी को सर्व शरीरी कह रही हैं अर्थात् पृथ्वी अप् तेज वायु आदि समस्त तत्व तथा जीवात्मा पर्यंत सब जगत् रामजी का शरीर है और रामजी सब के शरीरी हैं यह श्रुति सिद्ध है ।

त्यक्त शरीरस्य जीवस्य तच्छरीर नामोच्चारणपूर्वकम् पिंडोदकादि दानमन्यथानुपपद्यमानम् शरीराणां तच्छरीरिनामत्वमुपपादयतीत्येव मर्थापत्या शरीरनाम्नः शरीरिनामत्वसिद्धेः सर्व शरीरिणो रामस्य सर्व शब्द वाच्यत्वं निष्पन्नतरं ।

जीव के शरीर त्यागने पर भी शरीर नाम उच्चारण पूर्वक पिण्ड तथा उदकादि दान अन्यथा अनुपपद्यमान हो

कर शरीर के नाम को शरीरी का नाम बतला रहा है । इस अर्थापत्तिरूप प्रमाण से शरीर का नाम शरीरी का नाम है यह सिद्ध भया इसीसे सर्व शरीरी श्रीराम जी का सर्वशब्द वाच्यत्व सिद्ध है ।

श्रीरामस्य सर्वावतारित्वादवतार वाचकानां नाम्ना मवतारिणिपर्यवसानात्तत्नामवाच्यत्वं श्रीरामस्यैवोपपद्यते । राममन्त्रस्य तन्मुख्य वाचकत्वं तस्यराममन्त्रेति समाख्यया संज्ञया राम मन्त्र त्वप्रसिद्धेः सर्व वेद कारणकारणत्वाच्च श्रीराममन्त्रस्योंकार कारणत्वं इत्योमिति राम-तापनीयाश्रुतिर्वदति ।

श्रीरामजी सर्वावतारी हैं इससे अवतारों के नाम भी श्रीरामजी ही के नाम हैं परञ्च श्रीराममन्त्र मुख्यवाचक है क्योंकि उनकी संज्ञाही स्पष्ट रूप से राममन्त्र है और वह मन्त्र सर्व वेदों का कारण है श्रीराम मन्त्र ॐकार का कारण है यह इत्योमिति इस प्रकार की श्रीरामतापिनी की श्रुतिही कह रही है ।

राम नाम्नः समुद्भूतः प्रणवोमोक्षदायकः । इतिस्मृतिरपि तदेव वदति श्रीराममन्त्र प्रथमा-

क्षरस्य रेफस्य सर्व वेद सर्व मन्त्र चराचरात्मक सर्व जगत कारणत्वं यथा करंडे रत्नानि इत्यादिभिश्च ऋषिभिरुक्तम्।

मोक्षदायक प्रणव श्रीराम नाम से उत्पन्न हुआ है यह स्मृति भी तापिनी के अर्थ को समर्थन करती है और भी श्रीराममन्त्र का प्रथमाक्षर जो रेफ वह सर्ववेद सर्व मंत्र तथा चराचरात्मक सर्व जगत का कारण है यह यथा करंडे रत्नानि इत्यादि वाक्यों से पुलह संहिता आदि ग्रन्थों में महर्षियों ने कहा है।

तथैव श्रीरामतापनीयाश्रुतिरपि वह्निवीजस्य सर्वजगतकारणत्वं दर्शयति। यथैव वट बीजस्थः प्राकृतश्च महाद्रुमः। तथैव रामबीजस्थं जगदेतच्चराचरमिति॥ रेफस्य ब्रह्मादि वाचकाकाराद्याश्रयत्वेनैव ब्रह्माद्या श्रयतया ब्रह्मादि कारणत्वं ज्ञापयति श्रीरामतापनीया श्रुतिः रेफारूढा मूर्त्तयस्युः शक्तयस्तिस्र एवचेति॥

तथा श्रीरामतापिनीया श्रुति वह्निवीज को सर्व जगत कारण बतलाती है श्रुति यह है कि जैसे वट के बीज में

प्राकृत महाबृक्ष रहता है उसी तरह यह चराचर जगत श्रीराम बीज में स्थित है और भी रेफ को ब्रह्मादि वाचक अकारादि के आश्रय होने से अकारादि वाच्य ब्रह्मादिकों का भी कारण रेफ ही है यह 'रेफारूढामूर्त्तयः स्युः' यह श्रुति कह रही है श्रुति का अर्थ यह है कि ब्रह्मा, विष्णु, शिव ये तीनों मूर्ति तथा उनकी तीनों शक्ति रेफ में स्थित हैं।

अत्र मूर्त्तयः इत्यस्य त्रिशक्ति साहचर्य पाठेन मूर्तयः शक्तयः इत्युभयत्रैक विभक्त्यन्त निर्देशेन शक्ति शक्तिमतोरन्योन्य सापेक्षकत्वाच्च मूर्तयः इतिपदेन त्रिशक्तिमन्तो ब्रह्मादयएवोक्ता इति निश्चीयते।

यहां पर मूर्तयः इसका त्रिशक्ति के सहित पाठ होने से मूर्तयः शक्तयः इस तरह दोनों जगह एक विभक्ति निर्देश से शक्ति शक्तिमान का अन्योन्य सापेक्ष है। इससे 'मूर्तयः' इस पद से तीनों शक्ति से युक्त ब्रह्मादिक ही कहे जाते हैं।

श्रुत्यर्थस्तु रेफाश्रितानामाकाराकार मकाराणां वाच्याः ब्रह्म विष्णु महेश्वराः सशक्तिकाः

रेफारूढ़ाः सन्ति वृक्षारूढ़ा वृक्षाधारा वानरा इव रेफाधारा रेफाश्रिता रेफाध्येयत्वेन रेफाधीन स्वरूपस्थिति प्रवृत्तयः सशक्तिकाः ब्रह्मादयः रकाराद्युत्पद्यन्ते प्रतिपाद्यन्त इति यावत्।

श्रुति का तात्पर्य यह है कि रेफ में रहने वाले दीर्घ अकार ह्रस्व अकार और मकार इनके वाच्य शक्ति सहित ब्रह्मा विष्णु महेश्वर अपनी अपनी शक्तियोंके सहित रेफा-रूढ़ हैं जैसे वृक्षारूढ़ बानर वृक्ष के आधार वाला कहा जाता है इसी तरह रेफ के आधार में रहनेवाले ब्रह्मादिकों का भी स्वरूप स्थिति प्रवृत्ति रेफाधीन हैं अर्थात् शक्ति के सहित ब्रह्मादिक रेफ प्रतिपाद्य हैं।

पुलह संहिता बचनमपि एतदर्थं समर्थ-यति॥ रकाराज्जायते ब्रह्मा रकाराज्जायते हरिः। रकाराज्जायते शम्भू रकारात्सर्व शक्तयः॥ तदेवं जगतोवान्तर सृष्ट्यादि कारणानां ब्रह्मादीनां कारणत्व श्रुतेः राममंत्रप्रथमाक्षरस्य रेफस्य ब्रह्मादि कारणत्वेनादि कारणत्वोपपत्या स्ववा-च्य श्रीरामसमानधर्मवत्वेन रामतुल्यत्वनिष्पत्तेः

रामस्य मुख्यवाचकत्वम् । राममंत्रस्यैवोपपन्न-तरमिति ।

पुलह संहिता का वचन भी इस अर्थ को समर्थन कर रहा है। रकार से ब्रह्मा होते हैं, रकार से श्रीहरि होते हैं तथा रकार से शिव जी होते हैं और रकार ही से उनकी सब शक्तियां होती हैं। इसतरह जगतके अवान्तर सृष्ट्यादि कारणभूत ब्रह्मादिकों के भी कारण होने से श्रीराममंत्र का प्रथमाक्षर जो रेफ उसको अनादि कारणत्व सिद्ध है अपने वाच्य श्रीराम जी के समान धर्मवाला होने से रेफ श्रीराम जी के तुल्य है। अतएव यह श्रीराममंत्र श्रीरामजी का मुख्य वाचक है, यह पूर्णतया सिद्ध हो चुका।

श्रीराममन्त्रस्य सत्यानन्दगुणकापरिच्छि-न्न चित् स्वप्रकाश परब्रह्म वाचकत्वमपि। चि-द्वाचको रकारः स्यात् सद्वाच्योकार उच्यते। मकार आनन्द वाची स्यात् सच्चिदानन्दमव्यय ॥ मितिस्मृत्या सिद्धम् ।

श्रीराममंत्र को सत्य आनन्द गुणवाला अपरिच्छिन्न स्वरूप स्वप्रकाश परब्रह्म वाचकत्व भी चिद्वाचक रकार है, सद्वाचक अकार है, मकार आनन्द वाची है। इस तरह

सच्चिदानन्द अव्यय ब्रह्म श्रीराम शब्द वाच्य है, इस स्मृति से सिद्ध है।

रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि। इति रामपदे नासौ परं ब्रह्माभिधीयते॥ चिन्मयस्या द्वितीयस्य निष्कलस्या शरीरिणः। उपासकनां कार्यार्थं ब्रह्मणो रूप कल्पना॥ रूप स्थानां देवतानां पुंस्त्र्यंगास्त्रादि कल्पना। द्विचत्वारिषडष्टासां दश द्वादश षोडश। अष्टादशामी कथिता हस्ताशंखादिभिर्युताः॥ सहस्रांता स्तथा तासां वर्णवाहन कल्पना॥

श्रुत्यर्थस्तु यस्मिन् सत्यानन्दे सत्यानन्द गुणके अनन्ते अपरिच्छिन्ने चिदात्मनि स्वप्रकाशचित् स्वरूपे योगिनोरमन्ते इतिहेतोः रामपदेन सच्चिदानन्दार्थकेन सच्चिदानन्द स्वरूपराम तादात्म्य प्राप्तेन असौदाशरथी रामः परंब्रह्माभिधीयते।

सर्वव्यापकः सर्वजगदादिकारणभूतः सर्वा-

वतारी उभय विभूतिस्वामी सर्वोपास्यः मुक्ति जीव प्राप्यः अभिधीयते ।

श्रुतियों का अर्थ यह है कि जिस सत्यानन्द स्वरूप सत्यानन्द गुणक त्रिविधपरिच्छेद शून्य स्वप्रकाश चित्स्वरूप में योगिवर्य्य रमण करते हैं इस हेतुसे सच्चिदानन्दार्थक तथा सच्चिदानन्दरूप श्रीरामजी के तादात्म्य भाव को प्राप्त इस श्रीराम पद से ये श्रीदशरथ---राजकुमारही परब्रह्म कहे जाते हैं अर्थात् सर्व व्यापक सर्व जगतके आदि कारण भूत, सर्वावतारी उभय विभूति स्वामी, सबके उपास्य देव मुक्त जीवों के प्राप्यभूत श्रीरामजी ही कहे जाते हैं।

इति रामनिष्ठ परब्रह्मत्व प्रकाशनस्याभिप्रायः कुतइति चेत् परब्रह्म व्यतिरिक्तस्योक्त सर्व व्यापकत्वादिरूपित्वानुपपत्तेः। एवं राममंत्रस्य सच्चिदानन्दार्थ कत्वेन सच्चिदानन्दपरब्रह्मस्वरूप वाचकत्वं प्रदर्श्य तद्वाच्यस्य श्रीरामस्य परब्रह्मत्वाभिधानेन सर्बव्यापकत्व सर्व कारणत्व सर्वावतारित्वं स्फुटयन्ति।

इस तरह श्रीरामनिष्ठ परब्रह्मत्वप्रकाशनका अभिप्राय है यदि कहो कि यह कैसे तो परब्रह्म को छोड कर कहे हुए

सर्व व्यापकत्वादि धर्मों की सिद्धि अन्य में नहीं हो सकती है। इस प्रकार श्रीराममंत्र को सच्चिदानन्द अर्थ वाले होने से यह मंत्र सच्चिदानन्द परब्रह्म स्वरूप का वाचक है यह दिखलाकर तिस मंत्र के वाच्य जो श्रीरामजी उनको परब्रह्म कहने से ही सर्व-व्यापक सर्व-कारण सर्वावतारी इत्यादि धर्म श्रुति स्पष्ट करती है।

यत्परंब्रह्म रामपदेनाभिधीयते तस्यैवरामाख्यस्य चिन्मयस्य स्वप्रकाशस्वरूपस्य अद्वितीयस्य स्वसमाभ्यधिक रहितस्यब्रह्मणोरूपकल्पना द्विहस्तादि सहस्रहस्तां ता उपासकानां कार्यार्थं सम्पद्यते। इत्येवं पूर्वपरयोः श्रुत्योरेक वाक्यता करणेन रामाख्यस्य ब्रह्मणः सर्वावतारित्वं स्फुटं भवति।

जो परब्रह्म राम पद से कहे जाते हैं उन्हीं चिन्मय स्वप्रकाश स्वरूप अपने समान अधिकता से रहित रामाख्य परब्रह्म की द्विहस्तादि से लेकर सहस्र हस्त पर्यन्त रूप कल्पना उपासकों के कार्य के लिये होती है। इस तरह पूर्व पर की श्रुतियों के एक वाक्यता करने से श्रीराम

सच्चिदानन्दवाचकत्वात् स्वस्यब्रह्मात्मकत्वाच्च रामाख्यपरब्रह्म मुख्यवाचकत्वं निरूपाधिकमिति श्रुतिभिः प्रकाशितम्॥

यहां पर 'ज्योतिर्मयं' यह मयट् प्रत्यय स्वार्थ में है इसका तात्पर्य ज्योति रूप श्रीरामजी को मैं भजता हूं इस प्रकार से मंत्र और तद्वाच्य श्रीरामजी को अभेद वर्णन किया इससे श्रीराममंत्र श्रीरामाख्यपरब्रह्म को सच्चिदानन्द रूप कहरहा है और स्वयं भी सच्चिदानन्द स्वरूप है। इस कारण से यह मंत्र सर्व कारणपरब्रह्म का मुख्य वाचक है यह निरुपाधिक सिद्धान्त पक्षपात रहित श्रुतियों से प्रकाशित है।

भगवन्नामान्तराणितुनसच्चिदानन्द भगवत्स्वरूपसाक्षाद् वाचकानि किन्तुतद्गुण कर्मद्वारा तद्वाचकानि इतिहेतोः तानिगौणानि इति तत्तन्नामनिरुक्त्यावगम्यते तथाहि वेवेष्टीति विष्णुरिति विष्णुशब्दो व्यापकत्वरूप तद्गुण बोधनद्वारा परब्रह्म वाचकः तथा आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः। तस्यता

अयनं पूर्वं तेन नारायणःस्मृतः ॥इतिस्मृतेः॥

भगवान के अन्य नाम भगवान के सच्चिदानन्द स्वरूप के साक्षाद् वाचक नहीं हैं किन्तु तद्गुण कर्मद्वारा भगवत्स्वरूप वाचक हैं इसी कारण वे गौण हैं । यह तत्तन्नाम की निरुक्ति सेही ज्ञात होता है जैसे कि वे वेष्टीतिविष्णुः यह विष्णु शब्द व्यापकत्व रूपतद्गुण बोधन द्वारा परब्रह्म वाचक है तैसेही नार नाम है जलका, क्योंकि नरशब्द वाच्य कारण ब्रह्म से जल उत्पन्न हुआ है इसी से नार नाम है उसपर ब्रह्म का सृष्टि के आदि में वह स्थान हुआ इसी कारण जल में शयन करने वाले भगवान का नाम नारायण हुआ, यह स्मृति है।

सृष्टानारंतोयमंतः स्थितोहं तेन मे नाम नारायणेति इति महाभारत वचनात् नराज्जाताः नाराः ताः आपः अयनं यस्य स नारायणः। इत्येवं नारायणशब्दः क्षीराब्धिनिवास करणरूप गुणकर्म वाचकत्वद्वारा ताटस्थ्येन परब्रह्मवाचकः नतु सच्चिदानन्दगुणाक चिद्रूप ब्रह्मणो साक्षात् वाचकः ।

महाभारत में भगवानने कहा है जलको उत्पन्न कर उस में मैं स्थित हुआ, तिसी कारण मेरा नाम नारायण है। इस वचन से नर संज्ञक परब्रह्म से उत्पन्न हुए जल में शयन करने से नारायण नाम पड़ा यह नाम क्षीराब्धि निवास करण रूप तद्गुण कर्म वाचक द्वारा तटस्थ भाव से परब्रह्म वाचक है। सच्चिदानन्द गुणक चिद्रूप ब्रह्म का साक्षात वाचक नहीं है।

एवं नराज्जातानितत्वानि नाराणीति विदुर्बुधाः। तस्यतान्ययनं पूर्वं तेन नारायण-स्मृतः॥ इतिस्मृतेः॥ नराज्जातानि तत्वानि ना-राणि तान्यनंययस्य स नारायणः। एवं व्युत्पन्नो नारायण शब्दोपि सर्वतत्त्वानां तदयनत्त्व बोध-नद्वारा ब्रह्मवाचकः नतु साक्षात् तद्वाचकः।

और भी भारत में कहा है कि नर संज्ञक परमात्मा से उत्पन्न हुए तत्वों को विद्वान लोग नार यह जानते हैं वेही नार संज्ञक तत्व परमात्मा के स्थान हुए इसी से उसका नाम नारायण पड़ा इस स्मृति से भी नर संज्ञक परमात्मा ने समस्त जगत कारण तत्वों को उत्पन्न किया उन तत्वों का नाम नार पड़ा उन तत्वों में अन्तर्यामी

रूप से रहने के कारण परमात्मा को नारायण कहते हैं इस व्युत्पत्ति से भी नारायण शब्द सर्व तत्वों में अयन के द्वारा परब्रह्म बोधक है। साक्षात् वाचक नहीं है।

तथा। वसति सर्वत्रेति वासुः वा प्रलये सर्वान् स्वस्मिन् वासयतीति वासुः वासुश्चासौ देवश्च वासुदेवः इतिवासुदेवशब्दोपि सर्वभूत निवासकर्तृत्व तत्कर्मद्वारा वा सर्वभूतानां स्वस्मिन्निवासकारयितृत्व रूपतद्गुण कर्मद्वारा तद्वाचकः नतु तत्स्वरूपस्यसाक्षात् वाचकः।

तिसी तरह सर्वत्र जो बसैं उनको कही वासु अथवा प्रलय में जो सबको अपनेमें बसावै उसको कही वासु, वासु जो देव उनको कही वासुदेव। इस प्रकार वासुदेव शब्द भी सर्वभूतनिवासकर्तृत्व रूप कर्म द्वारा तद्वाचक है साक्षात् ब्रह्म स्वरूप वाचक यह भी नहीं।

तथा हरति भक्तानां दुःखमितिहरिः प्रलये सर्वान् स्वस्मिन् हरतीति वा हरिः इतिनिरुक्त्या हरिशब्दो भक्तदुःखहरत्व तत्कर्मबोधनद्वारा

प्रलयेवा सर्वभूतानामाहरणात्वरूप तत्कर्मबोधनद्वारा तद्वाचकः न तु सच्चिदानन्द तत्स्वरूप वाचकः।

भक्तों के दुःख को हरण करै उसका नाम हरि, वा प्रलयावस्था में सब जगत को अपने में आकर्षण करले उसका नाम हरि। इस तरह हरि शब्द भी भक्तों के दुःख हरने से वा प्रलय काल में अपने उदर में निवास के लिये सर्व भूतों का आकर्षणत्व रूप तत्कर्म बोधन द्वारा ब्रह्म वाचक है। सच्चिदानन्द स्वरूप साक्षात् वाचक यह भी नहीं।

एवं। ज्ञानशक्ति वलैश्वर्य्य तेजोवीर्याण्यशेषतः। भगवच्छब्द वाच्यानि विनाहेयैर्गुणादिभिरित्युक्तो भगवच्छब्दोपि ज्ञानशक्त्यादि तद्गुणवाचकत्वद्वारापरब्रह्मवाचकः नतु तत्स्वरूपवाचकः।

इसी प्रकार ज्ञान शक्ति वल ऐश्वर्य तेज वीर्य ये सम्पूर्ण षड्गुण हेय गुणों के बिना भगवच्छब्द वाच्य हैं अर्थात ज्ञान शक्त्यादि षड्गुण पूर्ण जिस में हो उसको

भगवान कहते हैं । इस रीति से भगवच्छब्द भी ज्ञान शक्ति बलादि परब्रह्म गुण वाचक द्वारा परब्रह्म वाचक हैं, साक्षात परब्रह्म वाचक नही हैं ।

तथा । कर्षतीति कृष्णः इतिकृष्णशब्दोपि चित्ताकर्षणात्मक तद्गुण कथनद्वारा तद्वाचकः कृषिर्भू वाचकः शब्दोणश्च निर्वृत्तिवाचकः । तयोरैक्यं महाविद्ये कृष्णइत्यभिधीयते इत्युक्तोपि-कृष्णशब्दस्तत्सत्यानन्दगुणद्वयवाचकत्व द्वारा तद्वाचकः अयमपि चित्स्वरूपं न वदति येन तत्स्वरूप वाचकः स्यात् ।

तिसी प्रकार सबके चित्त को आकर्षण करै तिन को कहिये 'कृष्ण' इस व्युत्पत्ति से कृष्ण शब्द भी चित्ताकर्षणात्मक तद्गुण कथन के द्वारा ब्रह्मवाचक है । 'कृषि' सत्ता वाचक शब्द है 'ण' यह आनन्द वाचक है सत्य आनन्द का ऐक्य जिसमें हो उस परब्रह्म को श्री कृष्ण कहते हैं इस स्मृति से कहा हुआ कृष्णशब्द भी सत्य आनन्द गुण द्वय का वाचक है तद्द्वारा ब्रह्मवाचक है ।यह भी चित्स्वरूप को नहीं कहता है जिसते तत्स्वरूप वाचक कहा जाय ।

अत्र अस भुवीति धातोरूपम् सत्यम् भू सत्तायां विद् सत्तायां सत्ता विद्यमानता सत्यं विद्यमानत्वं तद्गुण एव निवृ त्तिरानन्दः सोपि सुखपर्यायत्वेन गुणएव। आनन्दं ब्रह्मणोविद्वान् न बिभेति कुतश्चन। इति श्रुत्या स एको ब्रह्मण आनन्द इति श्रुत्याचानन्दस्य ब्रह्मसम्बन्धित्व प्रदर्शनेन ब्रह्मगुणत्व ज्ञापनात्।

यहां पर 'असभुविसत्तायां' इस धातु का रूप सत्य यह बनता है क्योंकि 'भूसत्तायां' 'विदसत्तायां' इत्यादि सत्तार्थक धातु हैं सत्ता कहते हैं विद्यमानता को और सत्य विद्यमानत्व है। वह भी ब्रह्म का गुण ही है। निवृत्ति नाम है आनन्द का वह भी सुख पर्याय होने से गुण ही है।

'आनन्दंब्रह्मणो विद्वान्नबिभेति' इस श्रुति से तथा 'स एको ब्रह्मण आनन्दः' इस श्रुति से आनन्द को ब्रह्म सम्बन्धित्व दिखा कर ब्रह्म का गुणही बतलाया, इससे सत्य आनन्द ये दोनों ब्रह्म के गुण ही हैं।

आनन्दोब्रह्मेति समानाधिकरणय व्यपदे-शस्तु आनन्दस्य ब्रह्मगुणेषुसारत्वादुपपद्यते तथै-

वोक्तं सूत्रकारेण तद्गुण सारत्वात्तद्व्यपदेशः प्राज्ञवदिति आनन्दस्य ब्रह्मणोगुणेषु प्राधान्यात् ब्रह्मसमानाधिकरण्येन आनन्दो ब्रह्मेति व्यपदेशः प्राज्ञवत् सम्भवति यथाप्राज्ञस्य विज्ञानं यज्ञं तनुते कर्माणिकुरुतेपि चेत्यत्र विज्ञानशब्देन उक्तस्य प्राज्ञस्य जीवस्य सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्मेत्यत्र ब्रह्म समानाधिकरण्येन तद् व्यपदेशः तद्वदिति सूत्र स्यार्थः।

'आनन्दो ब्रह्म' यह समानाधिकरण व्यपदेश यानी कथन ब्रह्म के सर्व गुणों में सारभूत होने से घट सकता है, सूत्रकार ने भी यही कहा है। तद्गुण सार होने से तद्व्यपदेश प्राज्ञवत होता है। आनन्द को ब्रह्म के सर्वगुणों में सार होने से ब्रह्म समानाधिकरण से आनन्द को ब्रह्म यह व्यपदेश होता है, वह प्राज्ञ के समान है जैसे "विज्ञानंयज्ञं तनुते" इस श्रुति में कहे हुए प्राज्ञ जीवको 'सत्यं ज्ञान मनन्तं ब्रह्म' यहां पर ब्रह्म समानाधिणकरण्य से व्यपदेश होता है। यह सूत्र का अर्थ है।

आनन्दादयः प्रधानस्येति सूत्रं प्रधानस्य

ब्रह्मण आनन्दादयोगुणाः न त्वन्यस्येति स्फुट-मानन्दादीनां ब्रह्मगुणत्वं वदति आनन्दोपि गुणोस्ति तस्मात् सत्यानन्द वाचकत्वात् कृष्ण-शब्दोपि गुणद्वारा ब्रह्मवाचकः न स्वरूपस्य वा-वाचकः एवं विष्णुमहाविष्णु ब्रह्मपरब्रह्मशब्दाश्च व्यापकत्व गुणवाचकद्वारैव परब्रह्मवाचका महे-श्वर महेशानादि शब्दाश्च जगन्नियन्तृत्व तद्गुण द्वारातद्वाचकाः एवं सर्वे पि शब्दा सच्चिदानन्दा-र्थक रामशब्द व्यतिरिक्ताः परब्रह्मस्वरूपवाचक-त्वाभावेन न तेषां मुख्यवाचकत्वम् अपितु ब्रह्म-गुणवाचक द्वारैव तद्वाचका अतस्ते गौणा इत्युच्यन्ते।

'आनन्दादयः प्रधानस्य' यह सूत्र भी आनन्दादि प्रधान जो ब्रह्म उसी के गुण हैं दूसरे के नहीं। यह स्पष्ट रूप से आनन्दादिकों को ब्रह्म गुण कह रहा है इससे सत्य आनन्द गुण ही है गुण वाचक होने से कृष्ण शब्द भी चित्स्वरूप ब्रह्म बाचक नहीं है। इसी तरह विष्णु, महा

विष्णु, ब्रह्म, परब्रह्म, इत्यादिक शब्द भी व्यापकत्व गुण द्वारा ही परब्रह्म वाचक हैं । ऐसे ही महेश्वर, महेशान, शिवादि शब्द भी जगन्नियंतृत्वादि गुण द्वारा पर ब्रह्म वाचक हैं इस प्रकार सच्चिदानन्दार्थक राम शब्द से व्यतिरिक्त संपूर्ण शब्द सच्चिदानन्द ब्रह्म स्वरूप वाचक न होने से वे मुख्य वाचक नहीं हैं किन्तु ब्रह्म के गुण कर्म द्वाराही वाचक होने से ब्रह्म वाचक कहे जाते हैं तस्मात् वे सवगौण हैं ।

तदुक्तं व्यासेन ।

यस्यावतार गुणाकर्म विडम्वनानि नामानि येऽसु विगमे विवसागृणन्ति । इति तत्रोक्तानि नामानि गुणविडम्वनानि सन्ति कर्मविडम्बनानि तु खरारिरावणारिमुरारि कंसारि दैत्यारीत्येवमादीनिज्ञेयानि महाभारते च सहस्त्र नाम्नि विष्णुमहाविष्णवादीनि सर्वाणि नामानि गौणान्येवेति॥ यानि नामानि गौणानि विख्या- तानि महात्मनः । ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये । इति भीष्मवचनादेवावगम्यते ।

यह श्री व्यासजी ने कहा है कि जिस भगवान के गुण कर्म से कहे हुए नामों को प्राणान्त समय विवश होकर लेने परभी अनेक जन्मों के पापों को छोड़ कर जीव भगवद्धाम को प्राप्त होते हैं। तहां भगवान् हरि, विष्णु वासुदेव एवमादि नाम ये सब गुण प्रयुक्त नाम हैं खरारि रावणारि मुरारि कंसारि इत्यादि नाम कर्म प्रयुक्त हैं महाभारत के विष्णु सहस्रनाम में भी जो नाम कहे हैं वे सब गौण हैं 'यानि नामानि गौणानि' इस भीष्म जी के वचन से ही उन नामों को गौणत्व स्पष्ट है।

यस्तु रामशब्दः विष्णु सहस्रनाम्निपठितः सोपि गौणएव रघोकुलेःखिलंराति राजतेयोमही स्थितः। स राम इति लोकेषु विद्वद्भिःप्रकटीकृतः इत्यादि श्रुतिभिरुक्तः।

जो राम शब्द विष्णु सहस्र नाम में पठित है वह भी गौणही है जिसको रघोःकुलेखिलं राति इत्यादि श्रुतियोंने तापनी में कहा है।

यश्च सच्चिदानन्दार्थक ब्रह्मस्वरूपवाचक-त्वेन ब्रह्मणः मुख्यवाचकः रामशब्दः स सहस्र

नाम्नि न पठितः तस्य विष्णुनामसहस्रपाठफल-प्रदत्वेन तत्र पाठानुपपत्तेः मुख्यनाम्नि कथने भीष्मस्य गौणानि नामानि वक्ष्यामीत्यस्याः प्रतिज्ञायाः हानाच्च।

तदेवं रामनामव्यतिरिक्तानां सर्वेषां ब्रह्मनाम्नां गौणत्वसिद्धेः, रामनाम्नः सत्यानन्दगुणकापरिच्छिन्नचित्स्वरूपब्रह्मसाक्षाद्वाचकत्वेन सच्चिदानन्दब्रह्मात्मकत्वेन च ब्रह्मणो मुख्यवाचकत्वनिष्पत्तेः।

जो सच्चिदानन्दार्थक तथा ब्रह्मस्वरूप साक्षात वाचक श्रीराम शब्द ब्रह्मका मुख्य वाचक है वह सहस्र में नहीं पढ़ा गया है क्योंकि वह भगवान के अन्य सहस्र नाम पाठ के फल का देने वाला होने से उसका सहस्रनाम में पाठ होना योग्य नहीं है। तथा भीष्मने 'गौणानि नामानि वक्ष्यामि' यह जो प्रतिज्ञा की है उसकी भी हानि होगी। इस प्रकार श्रीराम नाम से व्यतिरिक्त संपूर्ण परब्रह्म के नामों का गौणत्व सिद्ध है और सत्यानन्द गुणक अपरिच्छिन्न चित्स्वरूप ब्रह्म के साक्षात् वाचक होने से तथा

स्वयं सच्चिदानन्द ब्रह्मरूप होने से राम नाम परब्रह्मका मुख्य वाचक है।

यथा स्वरूपापेक्षया तद्गुणानां न्यूनत्वमुपपद्यते तथा स्वरूपवाचकब्रह्मात्मकरामनामापेक्षया तद्गुणकर्मवाचकानां भगवन्नाम्नां न्यूनत्वमवधार्य रामनाम्नो नामान्तरेभ्योऽनेकसहस्रगुणाधिक्यमुक्तं सर्वज्ञैर्व्यासादिभिः।

जैसे स्वरूपकी अपेक्षासे गुणोंको न्यूनत्व होता है उसी तरह स्वरूप वाचक ब्रह्मात्मक श्रीरामनामकी अपेक्षा गुण कर्म वाचक अन्य भगवन्नामोंका न्यूनत्व विचार कर अन्य भगवन्नामान्तरोंसे अनेक सहस्र गुण अधिक श्रीरामनामको व्यासादिक महर्षियोंने बतलाया है।

यथा पद्मपुराणोत्तरखण्डे।

विष्णोरेकैकनामैव सर्ववेदाधिकं मतम्।
तादृङ्नामसहस्रैस्तु रामनामसमं मतम्॥

अत्रनाम सहस्रेणेत्येवं नोक्तमपि तु सहस्रैरिति बहुवचनेन विष्णुकोटिसहस्रनामसमत्वं

श्रीरामनाम्नो ज्ञापितं भवति। तथैवानन्तरश्लोके-
श्रूयते।

जपतः सर्ववेदांश्च सर्वमंत्रांश्च पार्वति।
तस्मात्कोटिगुणं पुण्यं रामनाम्नैव लभ्यते॥

पद्मपुराण के उत्तर खंड में लिखा है कि विष्णु भगवान के एक एक नाम सर्व वेदों से अधिक हैं अर्थात् सर्व वेदों के पाठ करने से जो फल होता है वह भगवान के एक नाम के उच्चारण करने से होता है और वैसे वैसे कई हज़ार नाम उच्चारण के बराबर श्रीराम नाम माना गया है। यहां पर 'सहस्रेण' यह एक वचन न कहकर 'सहस्रैः' यह बहु बचन कहकर विष्णु भगवान के कोटि नाम के समान श्रीराम नाम को जनाया, यह अनन्तर के श्लोक में स्पष्ट है। श्री शिव जी ने कहा है कि हे पार्वति सर्व वेदों के जपने मे तथा सर्व मंत्रों के जपमे से जो फल होता है उससे कोटिगुण अधिक पुण्य श्रीरामनाम के एक बार उच्चारण करने से प्राप्त होता है। इस में 'राम नाम्ना' एकवचन देने से ही एक वार के उच्चारणका फल कहा गया।

यतः सर्ववेदसर्वमंत्रजपफलात् श्री-
रामनामकोटिगुणाधिकपुण्यप्रदमतः सर्ववेद-

सर्वमंत्रांतरेभ्यः कोटिगुणाधिक्यं रामनाम्नः शिवस्यमतम् । 'सहस्रनामतातुल्यं रामनामवरानने' अत्रापि सहस्रनामतातुल्यमित्यस्य पदस्य सहस्रैरिति पूर्वोक्तबहुवचनानुगुणेन सहस्रनाम्नां समूहः सहस्रनामता तया तुल्यमित्यर्थों निष्पद्यते ।

जिससे सर्ववेद सर्वमंत्र जप फल से कोटि गुण अधिक पुण्यप्रद श्रीराम नाम को कहा। तस्मात सर्व वेद सर्व मंत्रांतरों से श्रीराम नाम को कोटि गुण अधिकत्व है यह श्री शिवजी का सम्मत है। 'सहस्र नामतातुल्यं राम-नाम वरानने' यहां पर भी 'सहस्रैः' इस पूर्व बचन के अनुकूल सहस्र नामों का जो समूह उस को कही सहस्र नामता इस तरह अर्थ निष्पन्न होता है ।

तथा। सर्वेषु मंत्रवर्गेषु श्रेष्ठं वैष्णवमुच्यते ।
गाणपत्येषु शैवेषु शाक्तसौरेष्वभीष्टदम्॥
वैष्णवेष्वपि मंत्रेषु राममंत्राः फलाधिकाः।
मंत्रस्तेष्वप्यनायासफलदोयं षडक्षरः ॥
शान्तः प्रसन्नः वरदोह्यक्रोधोभक्तवत्सल ।

अनेन सदृशो मंत्रो जगत्स्वपि न विद्यते ॥

इत्यगस्त्येनाप्युक्तम् ।

तथा अगस्त्य संहिता में भी लिखा है कि गणपति शिव, शक्ति, सूर्य्यादि के समस्त मंत्र वर्गों में, श्री वैष्णव मंत्र श्रेष्ठ हैं और सब के अभीष्ट देने वाले हैं । उन समस्त बैष्णव मंत्रों में भी श्री रामजी के मंत्र अधिक फलप्रदाता हैं और समस्त राम मंत्रों में भी यह षड़क्षर मंत्र अनायास फल देने बाला है । शान्त, प्रसन्न, वरदायक, क्रोधरहित, भक्तवत्सल, यह षडक्षर मंत्र है । जगत् मात्र में इस मंत्र के समान दूसरा मंत्र नहीं है, यह श्री अगस्त्य जी ने भी कहा है ।

एवम् । श्रीरामाय नमो ह्येतत्तारकं ब्रह्मसंज्ञकम् ।

विष्णोर्नाम्नां सहस्राणां तुल्य एष महामनुः

अनन्ता भगवन्मंत्रा नानेन तु समा कृताः ।

इममेव परं मंत्रं ब्रह्मरुद्रादिदेवताः ॥

ऋषयश्च महात्मानो जप्त्वा मुक्ता भवाम्बुधे-

रित्यारभ्य,अद्यापि रुद्रः काश्यां हि सर्वेषां त्यक्त-

देहिनाम् । दिशत्येतन्महामंत्रं तारकं ब्रह्मनामकम् ।

तस्य श्रवणमात्रेण सर्व एव दिवंगताः ॥ इत्थं हारीतेनोक्तम् ।

इसी तरह श्रीरामाय नमः यह तारक मंत्र ब्रह्म संज्ञक है और यह महामंत्र विष्णु भगवान् के हजारहों नाम के तुल्य है। भगवन्मंत्र अनंत हैं पर इस के समान कोई भी नहीं माने गये हैं। इसी परम मंत्र को ब्रह्म रुद्रादि देवता जपते हैं और महात्मा ऋषि गण भी इसी मंत्र को जपकर संसार समुद्र से मुक्त हुए हैं। यहां से आरंभ कर अबतक भी काशी में देह त्यागने वाले प्राणियों को श्री रुद्रदेव इस महामंत्र का उपदेश देते हैं। इस तारक ब्रह्म संज्ञक मंत्र के श्रवण मात्र से सब जन्तु परम पद को प्राप्त हो गये हैं, यहां पर्यन्त श्री हारीत महर्षि ने कहा है।

तदेवं सर्वज्ञव्यासादिभिरपि रामनामतन्मंत्रयोर्नामांतरमंत्रान्तरेभ्यः कोटिगुणाधिक्योक्तेः सिद्धं तयोरामाख्यपरब्रह्मतादात्म्यगतत्वेन तत्स्वरूपसच्चिदानन्दाशेषवाचकत्वेन च सर्ववाचस्य वाचक इति श्रुत्युक्तं तन्मुख्यवाचकत्वम्।

इस प्रकार सर्वज्ञव्यासादि महर्षियों ने श्रीरामनाम तथा मंत्र को अन्य नाम से, अन्य मंत्रों से कोटि गुण अधिक

कहा है । अतएव रामनाम तथा राममंत्र को 'रामाख्य परब्रह्म' के साथ तादात्मभाव को प्राप्त होने से और सच्चिदानन्द ब्रह्म स्वरूप के अशेष वाचक होने से सर्व वाच्यों का वाचक यह मंत्र है । इस श्रुति का कहा हुआ मुख्य ब्रह्म वाचकत्व तथा अन्य मंत्र अन्य नामों से कोटि गुण अधिकत्व सिद्ध है ।

ब्रह्मात्मकाः सच्चिदानन्दाख्या इति श्रुत्युक्तं तद्वाच्यरामब्रह्मतादात्म्यसंबंध कृतं तत्स्वरूपाशेष वाचकत्वकृतं च तन्नाममंत्रयोरन्यनाममंत्रेभ्यः कोटिगुणाधिक्यम् ।

ब्रह्मात्मकाः सच्चिदानन्दाख्या इस राम तापनी की श्रुति में कहे हुए तद्वाच्य श्री राम ब्रह्म के साथ तादात्म्य संबंध को प्राप्त तथा ब्रह्म स्वरूप के अशेष वाचक होने से रामनाम राम मंत्र को अन्य नाम अन्य मंत्रों से कोटि गुण अधिक होना सिद्ध है ।

ननु एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म न तत्समश्चाभ्य-धिकश्च दृश्यते इत्येवमादिश्रुतिभ्योब्रह्म एक मेवा तो न तद्वाचकेषु न्यूनाधिक्यमुपपद्यते इति

चेन्न । ब्रह्मस्वरूपेषु न्यूनाधिक्याभावेपि गुणवाचकत्व ब्रह्मस्वरूपवाचकत्वेन नाम्नां व्यासादिभिर्न्यूनाधिक्यत्वबहुतरप्रतिपादनात् ।

यदि कहो कि ब्रह्म एक अद्वितीय है न उस के कोई समान है, न उससे कोई अधिक है इत्यादि श्रुतियों से ब्रह्म एक ही कहा जाता है। तब उसके वाचक नामों में न्यूनाधिक्य कैसे हो सकेगा। सो यह कहना ठीक नहीं, यद्यपि ब्रह्म के सब रूप एक ही हैं उनमें भेद नहीं है। तथापि कोई गुण वाचक नाम हैं, कोई स्वरूप वाचक नाम हैं, उनमें न्यूनाधिक्य व्यासादि महर्षियों ने बहुत प्रकार प्रतिपादन किया है। श्रीराम मंत्र के वर्णों को ब्रह्मात्मक और सच्चिदानन्दाख्य श्रुति कहती है। इससे रामनाम राम मंत्र सक्षात ब्रह्म स्वरूप वाचक है। अन्य मंत्र अन्य नाम गुण द्वारा ब्रह्म वाचक है इस से श्रीरामनाम उनसे अधिक हैं। इसमें सन्देह नहीं, यह व्यास, अगस्त्य, हारीत इनके बचनों से स्पष्ट सिद्धान्त दृढतर है, इस में शंका का अवकाश ही नहीं है।

अथेदानीं मंत्रांतरेभ्यः कोटिगुणाधिकस्य तारकब्रह्मसंज्ञकषडक्षररामसंत्रस्यार्थनिरूपण-

परा स्तापनीयश्रुतयस्तासां व्याख्यानेन मन्त्रार्थः स्फुटीक्रियते ।

अब मंत्रांतरों से कोटि गुण अधिक तारक ब्रह्म संज्ञक षडक्षर श्री राममंत्र के अर्थ निरूपण में परायण श्री राम तापनीय की श्रुतियों के व्याख्यान से मंत्रार्थ को स्पष्ट करते हैं ।

क्रियाकर्मेज्य कर्तृणामर्थं मन्त्रोवदत्यथ ।
मननात्त्राणनान्मंत्रः सर्ववाच्यस्य वाचकः ॥

इत्याद्या मंत्रार्थ वादिन्यः श्रुतयः सन्ति तत्रास्यार्थः पूर्वमुक्तः । सुभूज्यौंतिर्मयोनंतरूपी स्वेनैवभासते । इयंश्रुतिः रामाभिन्नमंत्रराजावयवभूत रामितिबीजस्य अर्थंवदति स्वभूरिति ।

क्रिया कर्म ईज्य कर्ता इन सब के अर्थ को यह मन्त्र कहता है । मनन करने से जो रक्षा करै उसको मंत्र कहते हैं और यह षडक्षर मंत्र सर्व शब्द वाच्य श्रीरामजी का मुख्य वाचक है, इत्यादि मंत्र के अर्थके कहने वाली श्रुतियां श्रीरामतापनी में प्रसिद्ध हैं । इस श्रुति का अर्थ पहलेही वर्णन कर चुके हैं । श्रीरामजी से अभिन्न मंत्र राज का

अवयवभूत जो रेफ है उसके अर्थ को 'स्वभूर्ज्योतिर्मयोनन्त रूपी स्वेनैव भासते' यह श्रुति कहती हैं।

'स्वभूः' स्वतः सिद्धः अकारणकइत्यर्थः। 'ज्योतिर्मयः' ज्योतिरेव ज्योतिर्मयः स्वप्रकाशचिद्रूपः स्वार्थिकोमयट् अनन्तरूपी अपरिच्छिन्न रूपी अपरिच्छिन्नत्वात् सर्ववेद सर्व मन्त्रसर्व लोकाधारत्वेनोक्तः। ज्योतीरूपस्यास्यसूर्यादिरिवदृश्यत्वं तदन्य प्रकाश्यत्वं च स्यादित्याशंकयाह। स्वेनैवभासते इति। स्वयंप्रकाशरूपं इदं बीजं न त्वन्यप्रकाश्यमित्यर्थः अनयाश्रुत्या वह्नि बीजस्य ज्योतीरूप स्वप्रकाशत्वोक्त्या तद्वाच्य रामब्रह्मतादात्म्यं ज्ञापितम्।

यह बीज स्वभूः है अर्थात स्वतः सिद्ध है इसका कोई दूसरा कारण नहीं है और ज्योतिर्मय अर्थात प्रकाश रूप है। यहां पर मयट् प्रत्यय स्वार्थ में है और अनन्त रूपी है अर्थात अपरिछिन्न रूपी है। अपरिछिन्न रूप होने से ही सर्व वेद, सर्व मंत्र सर्व लोकों का आधार है। ज्योती

रूप इस बीज का सूर्यादि के समान दृश्यत्व होना तथा सूर्य के अंतर्यामी ब्रह्म हैं इसी तरह इसका भी कोई दूसरा प्रकाशक होगा इस शंका को दूर करते हुए 'स्वेनैव भासते' यह कहा, यह बीज स्वयं प्रकाशरूप है दूसरा इसका कोई प्रकाशक नहीं है इस श्रुति से वह्नि बीज को ज्योति रूप स्वप्रकाशक कहने से वह्नि बीज को श्रीराम परब्रह्म के साथ तादात्म्यभाव सूचित किया।

एवं वह्निबीजस्य ज्योतिर्मयत्वं स्वप्रकाशत्वरूपं श्रीरामब्रह्म तादात्म्यं दर्शितम् तेन ब्रह्मवत्सर्वजगत्कारणत्वं प्रदर्श्य अथ बीजावयव रेफस्य ब्रह्मादिकारणत्व बोधनेन क्षेत्रक्षेत्रीन्यायेन तस्य ब्रह्मादि स्वामित्वं ब्रह्मादीनां तदाश्रितत्वेन तदधीनस्वरूपत्वं च दर्शयति। रेफारूढा मूर्तयः स्युः शक्तयस्तिस्र एव चेतीयं श्रुतिः।

इस प्रकार बीज को 'ज्योतिर्मय' कहकर श्रीराम परब्रह्म के साथ तादात्म्य कहा तिससे ब्रह्म के समान सर्व जगत कारणत्व बीज को दिखलाया। अब बीज का अवयवभूत जो रेफ तिसको ब्रह्मादि कारणत्व बोधन

द्वारा क्षेत्र क्षेत्री न्याय से वीज को ब्रह्मादि के स्वामित्व और ब्रह्मादिकों को तदाश्रित होने से ब्रह्म स्वरूप वीज के आधीन ही उनकी स्वरूपस्थिति प्रवृत्ति है। इसको 'रेफारूढा मूर्तयः स्युः' यह श्रुति दिखलाती है।

रेफारूढा रेफाध्येयभूताकाराकारमकार-वाच्या मूर्तयो ब्रह्मादयः तिस्त्रस्तच्छक्तयश्च अनेन ब्रह्मादिस्वरूपस्थिति प्रवृत्तिस्तदधीनाइतिदर्शि-तम्श्रुत्या श्रुत्युपबृंहणभूतः पुलहसंहिता श्लोको-पि इममर्थं स्पष्टयति।

रेफ में आरूढ अर्थात रेफाध्येय मूर्ति अर्थात वीज में रहने वाले आकाराकार मकार वाच्य मूर्ति जो ब्रह्मादिक तथा उनकी शक्तियां भी रेफ के आधार में हैं इस से ब्रह्मादिकों की स्वरूपस्थिति प्रवृत्ति परब्रह्म भूत जो रेफ उसके आधीन जनाई। इसी श्रुतिके अर्थ को पुलह संहिता का यह श्लोक भी स्पष्ट कह रहा है।

रकाराज्जायतेब्रह्मा रकाराज्जायतेहरिः।
रकाराज्जायतेशंभू रकारात्सर्व शक्तयः॥

ब्रह्मणास्वमुखेन श्रीरामात्स्वोत्पत्तिः स्वयं तदुपासकत्वं च श्रीमद्रामायणेउक्तम्। संक्षिप्य-हिपुरालोकान्मायया स्वयमेवहि। महार्णवेशया-नोप्सु मात्वंपूर्वमजीजनः।

रकार से ब्रह्मा होते हैं, रकारही से हरि होते हैं, रकारही से शंभु होते हैं और रकारही से उनकी सर्वशक्ति-यां होती हैं। रकार को ब्रह्मरूप मानकर ब्रह्मादि रूप धा-रित्व कहा इसको ब्रह्माजी ने श्रीवाल्मीकिजी में स्वयं कहा है कि हे श्रीरामजी अपनी अचिन्त्य माया शक्ति से आप ने सब लोकों को अपने में संक्षेप करलिया अर्थात् लीन करलिया, फिर जगत बनाने की इच्छा से जल को प्रकट कर उस में आकर आप सोये। उस समय पहले मुझे आपने प्रकट किया।

महार्णवेशयानः नारायणरूपधारी सन् मां त्वं पूर्बं अजीजनः तदापृथिव्याअभावात् अ-प्स्वित्युक्तं। तेनादिसृष्टिरवगम्यते जलसृष्ट्यन-न्तरंतस्य नारायणेतिनाम बभूव। सृष्ट्वानारंतोय-मंतः स्थितोहं तेन मे नाम नारायणेति। इति

महाभारतवचनादवगम्यते । तेन जलसृष्ट्यनंतरं तत्रायन करणेन हेतुना मे मम नारायणेति नाम बभूवेत्यर्थः ।

ब्रह्मा जी के कहने का यह तात्पर्य है कि महार्णवमें सोते हुए नारायण रूप धारी होकर आपने सृष्टि के आदि में मुझे उत्पन्न किया उस समय में पृथ्वी का अभाव था इसी से 'अप्सु' यह कहा तिससे यह आदि सृष्टि जानी जाती है । जल सृष्टि के बाद जल में शयन करनेसे परब्रह्म का नाम नारायण हुआ । जलको उत्पन्नकर उसमें मैंने शयन किया इसीसे मेरा नाम नारायण पडा । इस महाभारत के बचनसे जलमें शयन करनेसे नारायण नाम होना प्रसिद्ध है ।

आपोनाराइतिप्रोक्ता इत्यादिभिः मनुना प्युक्तं ।
नरतीति नरःप्रोक्तः परमात्मासनातनः ॥

इति वचनेन नाराज्जाताः आपः नाराः ताः अयनं यस्य वा नाराज्जातानि तत्वानि तान्ययनं यस्य स नारायणः नरशब्दवाच्यः श्रीरामः । अव-यन करणानन्तरं वा तत्वायन करणानन्तरं नारा-यणसंज्ञकः स्मृतः वभूव इतियावत् ।

'आयोनाराइतिप्रोक्ता' यह मनुने भी कहा है और 'नरतीतिनरःप्रोक्तः' जो सबका प्रेरणा करै उस सनातन परमात्मा को नर कहते हैं। उस नर से उत्पन्न हुए जो तत्त्व उनको नार कहते हैं, नर शब्द वाच्य परमात्मा से उत्पन्न हुए जल को भी नार कहते हैं। जलमें शयन करनेसे अथवा तत्त्वों में निवास करने से उस परब्रह्म का इस अवस्था में नारायण नाम है। नर शब्द वाच्य श्रीरामजी है उन्हीं का जल में शयन करने से वा अन्तर्यामी रूप से तत्त्वों में स्थित होने से नारायण यह नाम हुआ है।

वेदोपब्रंहणभूते श्रीमद्रामायणे उपक्रमेयमर्थः प्रश्नप्रतिवचनाभ्यां प्रपंचितः। कोन्वस्मिन्नित्यारभ्यमहर्षे त्वंसमर्थोसि ज्ञातुमेवं विधं नरमितिवाल्मीकेः प्रश्नः तैर्युक्तः श्रूयतां नरः इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामोनामजनैः श्रुतः। स च सर्व्वगुणोपेत इत्यादि नारदस्य प्रतिवचनम् अनेन सनातनः सर्व्वकारणभूतः परंब्रह्म परमात्मा श्रीराम एव नरशब्दवाच्य इत्यवगम्यते।

वेदोपब्रंह्मणभूत श्रीमद्रामायण में आरम्भ में यह अर्थ श्रीवाल्मीकिजी का प्रश्न और श्रीनारदजी के उत्तर से दृढ

किया है 'कोन्वस्मिन्' यहां से लेकर हेमहर्षे इस प्रकार के नर अर्थात् सर्व प्रेरक, सर्व कारण भूत परमात्मा के जानने में आप समर्थ हैं उनको मुझसे कहिये अर्थात् नर शब्द वाच्य परमात्मा का प्रधान नाम कौनसा है यह श्रीबाल्मीकि जी का प्रश्न है 'तैर्युक्तः श्रूयतोंनरः' उनगुणों से युक्त उस नर को सुनिये अर्थात् उसके मुख्य नाम को सुनिये वह परब्रह्म इक्ष्वाकु वंश में अवतार लेकर राम इस सनातन आदि नाम से सर्व जनोंसे श्रुत हैं वही सर्व गुण सम्पन्न हैं इस तरह श्रीनारदजी का उत्तर है इससे सनातन सर्व कारण भूत परब्रह्म श्रीरामजी ही नर शब्द वाच्य हैं यह स्पष्ट जाना जाता है।

इत्येवं स्मृति प्रमाणात् स्मार्त्यनिरुक्तेश्च महार्णवायन करणनातरं वा तत्वानयनकरणानन्तरं जातस्य नारायणनाम्नः सादित्वमेव वेदज्ञवाल्मीकिव्यासादिप्रोक्तं श्रुतिमूलकं भवितुमर्हति वेदार्थज्ञ सर्वज्ञ वाल्मीकिव्यासादिप्रणीतत्वात्। मन्वादिप्रणीतवाक्य वदिति श्रुत्यनुकूलानुमानेन महाभारतादि वाक्यस्य श्रुतिमूल-

कत्वोपपत्तेः । श्रौतस्मार्तनिरुक्तिंविहाययुक्तिनि-रुक्त्या नारायणादि नाम्नोऽनादित्व साधनस्य स्वपक्षप्रेमावेशात् विद्युद्भिर्नारायणादिनाम वाच्य व्यक्तिविशेषस्य परविभूतिस्वामित्वं परस्वरूपत्वं च तत्तदुपासकाभिमतमात्रमेवेतिप्रेम्नासर्वसम-जसमिति मन्तव्यम् ।

इस तरह स्मृति प्रमाण से तथा स्मृति उक्त निरुक्ति से महार्णव में शयन करने के बाद नारायण संज्ञा है इससे प्राथमिक संज्ञा इस को नहीं कह सकते हैं । किन्तु दूसरी अवस्था की संज्ञा होने से उस परब्रह्म का यह नाम श्री राम नाम से पश्चात है । वेदज्ञ बाल्मीकि व्यासात् प्रोक्त सिद्धांत श्रुति मूलक ही होसकता है, क्योंकि वेदार्थज्ञ सर्वज्ञ बाल्मीकि व्यासादि प्रणीत होने से मन्वादि प्रणीत वाक्य के समान इस प्रकार श्रुति अनुकूल अनुमान से महाभारतादि वाक्यों का श्रुति मूलक होना योग्य है । श्रौत तथा स्मार्त निरुक्ति को छोड़ कर युक्ति निरुक्ति से नारायणादि नामों को ही अनादित्व सिद्ध करना यह केवल अपने उपासना के अनुकूल अपने पक्ष में प्रेमावेशही के कारण से है । प्रायः उपासक ऐसेही मानते हैं । इससे विद्वानों

को नारायणादि नाम वाच्य व्यक्ति विशेषही परविभूति स्वामी तथा पर स्वरूप हैं यह तत्तत उपासकों का अभिमत प्रेम तथा सदाचार से उचित ही जानना चाहिये।

मायया जनयित्वा तु द्वौ च सत्वौ महावलौ।
मधुं च कैटभं चैव ययोरस्थि चयैर्वृता॥
इयं पर्वत संवाधा मेदनी चा भवत्तदा।
पद्मे दिव्ये र्कसंकाशे नाभ्यामुत्पाद्यमामपि॥
प्राजापत्यं त्वयाकर्म मयि सर्वं निवेशितम्।

इति रामात् सोत्पत्ति रामदत्तप्राजापत्य कर्मकर्तृत्वं चात्मनः ब्रह्मणोक्तं भवति। रामस्यैव जलशयनकरणानन्तरं नारायणत्वोपपत्तेः।

उत्तरकांड के अन्त में श्री ब्रह्मा जी का बचन है कि हे श्रीराम जी आपने अपनी माया से मधु कैटभ नाम के महाबल वाले दो अद्भुत पुरुषों को प्रगट किया, जिनके अस्थि समूह से यह पर्वतादि संबद्ध पृथ्वी बनी, उसी जल में शयन करते समय दिव्य तथा सूर्य के समान नाभि से उत्पन्न हुए कमल में मुझे आपने प्रकट किया और प्रजापति का सब कर्म मुझ में आपने निवेशित किया। इसप्रकार

ब्रह्मा जी ने श्रीराम जी का दिया हुआ प्रजापति कर्म अपना बतलाया । जल में शयन करने से ही श्रीराम जी का नाम नारायण पड़ा ।

सोऽहं सन्यस्त भारोहित्वामुपासेजगद्गुरुम् ।
रक्षां विधत्स्वभूतेषु मम तेजस्करो भवान् ॥

अत्र त्वया सन्यस्त प्राजापत्यकर्म भारोहं त्वामुपासेत्वदुपासनं करोमि। इत्यनेन स्वस्य रामोपासकत्वेन रामशेषत्वं ज्ञापितम् ब्रह्मणेत्यवगम्यते।

आप से समर्पित जगत निर्माण रूप यह भार धारण किये हुए मैं जगतगुरु आप की उपासना करता हूं। सर्व भूतों की रक्षा आप विधान कीजिये, आप मेरे तेज के बढ़ाने वाले हैं। यहां पर आपही ने हमें प्रजापत्य कर्म भार दिया है, मैं आप की ही उपासना करता हूं। इस कथन से ब्रह्मा जी श्रीराम जी के उपासक होने से श्री राम जी ही के शेष हैं यह स्पष्ट जाना जाता है।

ततस्त्वमसिदुर्द्धषात् तस्मात् भावात्सनातनात् ।
रक्षांविधास्यन्भूतानां विष्णुत्वमुपजामवान् ॥

अनेन रामस्य विष्णुरूपधारित्वं ज्ञापितम् ।
सत्वं वित्रास्य मानासु प्रजासु जगतांवर ।
रावणस्यवधाकांक्षी मानुषेषु मनोदधाः ॥

अत्रपक्षपातशून्यतया प्रकरणपरामर्शेनाय-मर्थो विज्ञायते यस्त्वं महार्णवेशयनं कृत्वासर्व-जगदुत्पत्यादिवान् नाभ्यामामुत्पाद्यमयि प्रा-जापत्यं कर्मसन्यस्तवान् मत्प्रार्थनया जगत्पाल-नार्थं विष्णुरूपं च धृतवान् स एवत्वं विष्णवा-द्यवद्धे नरावणेन वित्रास्यमानासुप्रजासु प्रजारक्ष-णार्थं रावणस्य वधाकांक्षीसन् मानुषेषुमनोदधा अयोध्याधिपति श्रीदशरथेगृहे आविर्भावार्थं मनः कृतवानित्यर्थः ।

तिस के बाद तिस सनातन भाव से दुर्धर्ष रूप आप प्राणियों की रक्षा बिधान करते हुए विष्णु भाव को प्राप्त हुए । इस कथन से श्री राम जी ही विष्णु होते हैं, यह जाना जाता है । और भी कहा है कि सो सर्व कारण आप प्रजा को त्रासयुक्त देख कर रावण के बध के लिये

मनुष्य लोक में अवतीर्ण हुए हैं। इस प्रकरण को पक्षपात शून्य होकर देखनेसे यह अर्थ जाना जाता है। जिसने महार्णव में शयन कर जगत को उत्पन्न किया और नाभि कमल से मुझे उत्पन्न कर प्रजापत्य कर्म समर्पण किया और मेरी प्रार्थना से जगत पालनार्थ विष्णु रूप धारण किया वही आप हैं। त्रिषावादि रूप से अवध्य रावण से पीड़ित प्रजा के रक्षणार्थ रावण वध के लिये मनुष्य लोक में अयोध्याधिपति चक्रवर्ति श्रीदशरथ महाराज के घर में आविर्भाव का संकल्प किया।

अत्रमनोधारणमात्रमुक्तं न तु विष्णुत्वमुपजग्मिवानितिवत् रामत्वमुपजग्मिवान् मित्युक्तम् तेन यदवयवो यादृशोयत्प्रकारः सर्वावतारमूलकन्दः सर्वकारणभूतः परविभूति स्वामीपरस्वरूपः श्रीरामःस्वाभाविकोऽस्ति तादृशस्तत्प्रकार एव श्रीदशरथगृहे आविर्भूतः न तु प्रकारान्तरेण रूपान्तरापन्नः मनोदधाः इतिपदस्य तात्पर्य्यार्थोऽविगम्यते इति विभावयन्तुसुधियः।

यहां पर श्रीब्रह्मा जीने केवल इतनाही कहा कि आप

ने मनुष्य लोक में मन धारण किया इस का तात्पर्य यह है कि जैसे 'विष्णुत्व मुपजग्मिवान्' इस प्रकार 'रामत्व मुपजग्मिवान्' यह नहीं कहा इससे जैसा द्विभुजादि अवयव जिस प्रकार श्यामसुन्दर रूप अपरमित तेजो विशिष्ट, सर्वावतारी सर्व कारण भूत, पर विभूतिस्वामी परस्वरूप श्रीराम जी स्वाभाविक हैं वैसे ही द्विभुज श्यामसुन्दर उसी प्रकार के श्री दशरथ महाराज के गृह में प्रगट हुए। प्रकारान्तर से दूसरे रूप नहीं हुए। यह 'मनोदधाः' इस पद का तात्पर्य है इस को बुद्धिमान विद्वान विचार करैं।

तेन श्रीरामः एव सर्वावतारीभुव्यवतरणा दवतार इत्युच्यते न तु स्वावतार भूतानां विष्णु-नारायणादीनामवतारत्वं तस्योपपद्यते। यत्तु बालकांडीयैः तस्यभार्यासु तिसृषु ह्री श्रीकीर्त्युपमासु च। विष्णोपुत्रत्वमागच्छ कृत्वात्मानं चतुर्विधं। एवं दत्वावरं देवोदेवानां विष्णुरात्म-वान्॥ मानुषे चिन्तयामास जन्मभूमिमथात्मनः। इत्येवमादि वचनैः विष्णोः रामावतारत्वं प्रतीयते इति तन्नोपपद्यते॥

तिससे श्री राम जी सर्वावतारी हैं । केवल पृथ्वी में अवतरण होने के कारण अवतार कहे जाते हैं । अपने अवतार भूत नारायणादि के अवतार हैं यह नहीं घट सकता है । यदि कहो कि वालकांड में देवतों का कहना है कि ह्री, श्री, कीर्ति की उपमा वाली श्री चक्रवर्ति महाराज की तीन भार्यावों में अपने रूप को चार प्रकार बना कर हे श्री विष्णु भगवान आप पुत्र भाव को प्राप्त होवैं, यह बचन और आत्मवान श्री विष्णु भगवान ने इस प्रकार देवों को वरदान देकर मनुष्य लोक में अपने जन्म भूमि का चिंतवन किया इत्यादि बचनों से विष्णु भगवान का अवतार श्री रामजी हैं, यह प्रतीत होता है, सो यह नहीं घट सकता है ।

अपितु वालकांडोत्तरवाक्यानामेक वाक्यताकरणेन रामस्यैव विष्णवतारित्वं निष्पद्यते। तथाहि विष्णुरात्मवान् इति वचनं संदिग्धं । 'आत्मवत्' शब्देन आत्मा: देहधृतौजीवे स्वभावे परमात्मनीति कोषकारेणानेकार्थकत्व मात्म शब्दस्योक्तं किमर्थकोत्रात्मशब्द इति-सन्देहः सन्दिग्धोपक्रमार्थस्य निर्णायकोह्यसन्दि-

ग्धोपसंहारः। संदिग्धंतु वाक्यशेषादिति जैमिनसूत्र प्रमाणात्।

क्योंकि बालकांड उत्तरकांड के वाक्यों की एक वाक्यता करने से श्रीराम जी ही का विष्णु अवतारित्व सिद्ध होता है। जैसे कि 'विष्णुरात्मवान' यह बचन संदिग्ध है क्योंकि देह, धैर्य्य, जीव, स्वभाव, परमात्मा इतने को आत्मा कहते हैं। कोषकारने आत्म शब्द को अनेकार्थ बतलाया है। यहां पर आत्म शब्द से क्या लिया जायगा यह सन्देह है, सन्देह युक्त उपक्रम के अर्थ का निर्णय करने वाला सन्देह रहित उपसंहार हो सकता है। संदेह का निर्णय वाक्य शेष से होता है, यह जैमिनी का सूत्रही इस में प्रमाण है।

ग्रन्थोपसंहार भूतोत्तरकाण्डवचनानि संक्षय्प्यहि पुरालोकानित्यादीनि रामस्य नारायण विष्णुकारणत्वमसन्दिग्धं वदन्ति तदविरोधेन विष्णुरात्मवानित्यात्मशब्दोलक्षणया विष्णुकारणत्वं लक्ष्ययति विष्णुकारणत्वं तु रामस्योत्तर काण्डेस्फुटमुक्तम् तेन विष्णुरात्मवानित्यस्य

विष्णुः कारणवानित्ययमसंदिग्धोर्थो निष्पन्नः ।

ग्रन्थ के उपसंहार भूत उत्तरकांड के 'संक्षयपहि पुरा लोकान्' इत्यादि वचन श्रीरामजी को नारायण तथा विष्णु भगवान के कारण निस्सन्देह रूप से कह रहे हैं। इन्हीं बचनों के अनुकूल 'विष्णुरात्मवान' यह आत्मवत शब्द लक्षणा से विष्णुभगवान को कारणवत्व लक्षित करा रहा है। विष्णु भगवान के मूलरूप श्री रामजी हैं यह उत्तरकांड में स्पष्ट रूप से कहा है। इससे विष्णुरात्मवान् यह कहनेसे श्री रामजी बिष्णुके मूलरूप हैं यह सिद्ध हुआ।

ततश्च कृत्वात्मानं चतुर्विधं मानुषे चिन्तयामास जन्मभूमिमथात्मनः, इत्यत्र आत्मानं स्वात्मानं स्वकारणभूतं रामंचतुर्विधं कृत्वा आत्मनः स्वात्मनः स्वकारणस्य मानुषेजन्मभूमिं चिन्तयामासेत्यर्थकत्वोपपत्या रावणस्य वधाकांक्षी मानुषेषुमनोदधा इत्युत्तरकाण्डवाक्येन वालकाण्डवाक्यस्य निर्विरोधोपपत्तेः।

तिससे 'कृत्वात्मानं चतुर्विधं' इसका 'मानुषे चिन्त-

यामास' इस वाक्य का तात्पर्य्य यह है कि आत्मा अर्थात् अपने कारण भूत श्री राम जीको चतुर्विध किया तथा 'आत्मनः' इस का भी स्वकारणस्य यही अर्थ है। इहां कार्य्य का कारण केवल पूर्वा पर अवस्थाही जानना चाहिए ईश्वर रूपों में वस्तुतः ऐक्य होनेसे कार्य कारण भाव नहीं है। 'रावणस्य वधा कांक्षी मानुषेषु' मनोदधा इस वाक्य के अनुकूल बाल कांड के वाक्य को लगाना होगा तभी निर्विरोध अर्थ होसकेगा।

अन्यथा विष्णुर्मानुषेषु आत्म जन्मभूमिं चिन्तयामास रामोमानुषेषु मनोदधाविति परस्पर विशंवादित्वेन वाल्मीकवचनस्य अप्रामाण्याप-त्तेः रामस्यैव सम्पूर्णवाल्मीकीये विष्णुकारणत्वं निष्पद्यते।

अन्यथा विष्णु भगवान ने मनुष्य लोक में जन्म भूमि का चिंतवन किया और श्री राम जी ने मनुष्य लोक में अवतार का मन धारण किया यह परस्पर विरूद्ध वादी वाक्य प्रणायन से श्री वाल्मीकि बचन अप्रमाण हो जायगा इस से पूर्व सिद्धान्तानुसार संपूर्ण वाल्मीकीय में श्री राम जी

ही विष्णु होते हैं यह सिद्ध होता है ।

तथा। श्रीरामस्यमनुं काश्यांजजाप वृषभध्वजः।
मन्वन्तरसहस्रैस्तु जपहोमार्चनादिभिः ॥
ततः प्रसन्नः भगवान्श्रीरामः प्राहशंकरम् ।
वृणीष्व यदभीष्टन्ते ददामिपरमेश्वरेति ।

अत्रहि जन्तोः प्राणेषूत्क्रममाणेषु रुद्रस्तारकं ब्रह्म व्याचष्टे येनासावमृती भूत्वामोक्षी भवतीत्येवमादितापनीश्रुतिभ्यः शिवस्य श्रीराम मन्त्रजप तदुपासन तन्मन्त्रोपदेशेन काशीमृत जीवमोक्षप्रदत्वेन श्रीरामशेषत्वं निषन्नतरं विष्णोस्तु ब्रह्मरुद्रसाहचर्यत्वमुक्तम् तस्य परब्रह्मणः मूर्तिविशेषत्वेन श्रीरामाभिन्नत्वेपि श्रीरामस्य तन्त्प्रवर्तकत्वं सिद्धम्।

श्री काशी जी में वृषभध्वज श्री शिवजी ने हजार मन्वन्तर पर्यन्त होमार्चनादि पूर्वक श्रीराम जी के मंत्र का जप किया तिससे प्रसन्न होकर भगवान श्रीराम जी ने जो आपको अभीष्ट हो, वह मांगिये, हम देंगे, यह कहा। इत्यादि

से और इस काशी में जन्तुवों के प्राण निकलते समय रुद्र देव तारक ब्रह्म श्री राम मंत्र का उपदेश देते हैं जिससे वह जीव अमृत होकर मोक्ष का भागी बनता है। इस तापनी की श्रुति से श्री शिवजी का भी श्री राम मंत्र जप तथा श्रीरामोपासना करना और श्रीराम जी के मंत्र के उपदेश से काशी जी में मरे हुए जीवों को मोक्ष देना इन सब कारणों से शिवजी को श्री राम जी का शेष होना सिद्ध है। विष्णु भगवान को ब्रह्म रुद्र साहचर्यत्व ग्रन्थों में वहुत जगह कहा गया है। विष्णु भगवान परब्रह्म की मूर्ति विशेष हैं। इस कारण श्री रामजी से अभेद होने पर भी श्रीरामजी उन के प्रवर्तक हैं यह सिद्ध है।

ब्रह्मरुद्रयोः श्रीरामवाचक रकारशेषत्व सिद्धेस्तत्कृतसृष्टिप्रलयान्तर गतस्य सर्वस्य चराचरात्मकस्य जगतः कैमुत्य न्यायेन तच्छेषत्वोपपत्तेः।

आदावन्ते तथामध्ये रकारेषु व्यवस्थितम्।
विश्वं चराचरं सर्वमवकाशे न नित्यशः।
इतिस्मृतिरपिजगतः श्रीरामशेषत्त्वंवदति॥

ब्रह्म तथा रुद्र को श्री राम बाचक रकार शेषत्व

सिद्ध होने से ही उनके किये हुए सृष्टि प्रलय के अन्तर्गत चराचरात्मक समस्त जगत को कैमुत्य न्याय से श्रीराम शेष होना सिद्ध ही है। आदि अन्त तथा मध्य में चराचर विश्व अवकाश सहित रकार में व्यावस्थित है। यह स्मृति भी जगत् को श्रीराम शेष कह रही है।

तदेवं रेफस्य ज्योतिरूपानन्तरूपित्वस्वभा-समानत्व ब्रह्माद्यशेषचराचरात्मक जगत्कारणत्व श्रुतेस्तस्य ब्रह्मादिसर्वजागच्छेषित्वनिष्पत्ते स्तद्वाच्यस्यश्रीरामस्य ब्रह्मादि सर्वजगत्कारणत्व सर्व शेषित्वनिष्पत्तेश्च रामस्य शेषित्वं ब्रह्मादिसर्व जगतःशेषत्वं जीवस्य श्रीरामशेषरूपं ज्ञानानन्द स्वरूपं ज्ञानानन्दगुणकमणुपरिमाण स्वरूपं च शोधितं भवति।

इस प्रकार रेफ को स्वयंसिद्ध ज्योतिस्वरूप अनन्त रूपित्व स्वभासमानत्व ब्रह्मादि अशेष चराचरात्मक जगत्कारणत्व श्रुति कह रही है। इस से ब्रह्मादि सर्व जगत् शेष है, रेफ शेषी है, इस से रेफ वाच्य श्रीराम जीको सर्व जगत्कारणत्व और सर्व शेषित्व सिद्ध हुआ। श्रीराम जी

सर्व जगत के शेषी हैं और ब्रह्मादि सर्व जगत उनका शेष है इस से जीव का श्री राम जी का शेष रूप ज्ञानानन्द स्वरूप ज्ञानानन्द गुणक अणु परिमाणत्व यह शोधित हो चुका। जो जिस के लिये हो वह उसका शेष कहलाता है जैसे भूषण वस्त्र पादुकादि मनुष्य के लिये हैं, वे उनके शेष कहलाते हैं। इसी तरह सर्व जगत श्री राम जी के वास्ते है अतः उनका शेष है।

तत्र विज्ञानं यज्ञं तनुते कर्माणि तनुतेपि श्रुतिः जीवस्य सुप्रकाशविज्ञानस्वरूपत्वं तद्गुणकत्वं च वदति स एकोमानुषानन्दः इत्यारभ्य स एकोप्रजापतेरानन्दः इत्येवमादिश्रुतयोजीवस्यानन्दस्वरूपत्वं तद्गुणकत्वं च वदंति। एषोणुरात्मा चेतसावेदितव्य इति यं श्रुतिर्जीवस्य अणुप्रमाणत्वं च वदति।

'विज्ञानं यज्ञंतनुते' यह श्रुति जीव को स्वप्रकाश ज्ञानस्वरूप ज्ञानगुणक कह रही है 'एकोमानुषानन्दः' यहां से आरंभ कर 'स एको प्रजापतेरानन्दः' इत्यादि श्रुति जीव को आनन्द स्वरूप आनन्द गुणक बतला रहीं हैं। 'एषोणु-

शत्मा चेतसा वेदितव्यः' यह श्रुति जीव को अणु परिणाम कह रही है।

अत्रेदं वोध्यं जीवस्य श्रीराम व्यतिरिक्ते स्वशेषित्वबुद्धिः परस्वरूपविरोधिनो स्वनिष्ठत-च्छेशत्व विरोधिनी च स्वस्मिन् देवतांतरादिशे-षत्वबुद्धिः स्वनिष्ठ श्रीरामशेषत्वरूपस्वरूप विरो-धिनी श्रीरामनिष्ठस्वशेषित्व बिरोधिनी चेत्येव-मादयः परस्वरूप स्वस्वरूप विरोधिनोप्यत्रज्ञा-तव्यत्वेन वोधिताः।

यहां पर यह जानना चाहिये कि श्रीराम जी को छोड कर अन्य किसी को अपना शेषी मानना यह बुद्धि पर स्वरूप की विरोधिनी है और श्री राम शेषत्व रूप जो अपना स्वरूप उस की भी विरोधिनी है। इसी प्रकार अपने को श्रीराम जी को छोड़कर किसी देवता का शेष मानना यह बुद्धि स्वनिष्ठ श्रीराम शेषत्व रूप स्वस्वरूप की विरोधिनी है और श्री राम जी शेषी हैं। इस से शेषित्व श्री राम निष्ठ है। उस की भी विरोधिनी यह बुद्धि है तस्मात् स्वस्वरूप पर स्वरूप विरोधी वर्ग भी अवश्य जानने योग्य श्रुतियों से

कहे गये ।

तदेवं रामनिष्ठचराचर जगच्छेषित्वरूपं जीवनिष्ठतच्छेषत्वरूपं बीजास्यार्थं निर्दिश्याथ श्रीसीतारामयोः रेफारूढ़ा इतिश्रुत्यारेफवाच्यत्वं तयोः सर्वजागत्कारणत्वं च दर्शयति श्रुतिः। सीतारामौ तन्मयावत्र पूज्यौजातान्याभ्यां भुवनानिद्धिसप्तस्थितानि। प्रहृतानि च तेषु ततो रामो मानवोमायया धात्।

इस प्रकार रामनिष्ठ चराचर शेषित्व रूप और जीव निष्ठ तच्छेषत्व रूप बीज का अर्थ दिखाकर श्री सीतारामजी को 'रेफारूढ़ा' इस श्रुति से रेफ वाच्य तथा सर्व जगत कारणत्व कहा। उसी को श्रुतिस्पष्ट करती है सीतारामौ तन्मयौ इत्यादि से श्रुति का अर्थ कहते हैं।

अत्र अस्मिन्मंत्रराजावीजे सीतारामौ तन्मयौरेफमयौ पूज्यौज्ञातव्यौ पूजातिरत्र ज्ञानार्थः धातूनामनेकार्थत्वात्। अर्चनार्थत्वस्याग्रे वक्ष्यमाणत्वात् तन्मयाविति तच्छब्दः रेफारूढ़ा इत्यव्यहितस्य रेफस्य परामर्शकः।

इस मंत्रराजके बीज से श्री सीताराम जी को तन्मय अर्थात् रेफ मय जानना चाहिये। 'पूज्यौ' इस पद का जानना यह अर्थ है क्योंकि धातुओं का अनेक अर्थ होता है। अर्चन अर्थ में पूज धातु को आगे कहैंगे 'तन्मयौ' इसमें जो तत् शव्द है वह 'रेफारूढ़ा' इस अव्यवहित रेफ का परामर्शक है।

एतेन सीतारामौ रेफमयौ तादात्म्येन रेफवाच्यौतदेव रेफ तादात्म्यं दर्शयति जातान्याभ्या मिति आभ्यां श्रीसीतारामाभ्यां द्विसप्तभुवनानि अधःस्थानि सप्त उपरितनानि च सप्तेति चतुर्दश भुवनानि जातानि स्थितानि ताभ्यां पालितानि रक्षितानि च प्रहृतानि संहृतानि इति एतदुक्तं भवति। श्रीसीतारामौरेफवाच्यौ चतुर्दश भुवनस्योत्पादकौ रक्षकौ विनाशकौ च।

इस तरह श्रीसीताराम जी रेफ मय हैं। अर्थात तादात्म्य से रेफ वाच्य हैं उस तादाम्य को दिखलाते हैं इन्ही श्रीसीताराम जी से दो सप्त अर्थात् सात लोक नीचे के और सात लोक ऊपर के चतुर्दश भवन उत्पन्न होते हैं

और उन्हीं से पालित तथा विनष्ट होते हैं। इस का तात्पर्य यह है कि श्रीसीताराम जी रफे वाच्य हैं और चौदहो भुवन के उत्पादक, रक्षक तथा विनाशक हैं।

अनेन यथाक्षेत्रावपनेन सिंचनेन पालनेन छेदनेनायं क्षेत्रस्य स्वामीति निश्चीयते तथा जगदुत्पादन रक्षण विनाशरूप व्यापारै रामोस्य जगतः स्वामीति निश्चयाद्रामस्य सर्वजगत्स्वामित्वेन सर्वशेषित्वं सर्वस्य जगतः तच्छेषत्व, नादि सिद्धमेवेति श्रुत्यास्फुटीकृतम् ।

इस से जैसे खेत के बोने से सिंचन से रक्षण से तथा छेदन से यही इस खेत का स्वामी है यह निश्चय होता है। तिसी तरह जगत की उत्पत्ति रक्षा विनाश रूप व्यापारों से श्रीरामजी ही जगत के स्वामी हैं इस निश्चय से श्रीराम जी का सर्वशेषी होना और जगत सर्व उनका शेष है यह श्रुति ने स्पष्ट किया।

ततः सृष्ट्यनन्तरं तेषु सृष्टेषु भुवनेषु माया वयुनं ज्ञानमितिस्मृतेर्मायाशब्दोत्र ज्ञानपर्यायः

नैघण्टुकैरधीयते अतो मायया ज्ञानेन रामः आ-
त्मानं अधात् प्रावेशयदित्यर्थः तत्सृष्ट्वा तदेवा-
नुप्राविशदिति श्रुत्यन्तरात् ।

ततः नाम सृष्टि के अनंतर तिस बनाये हुए भुवनों
में श्रीरामजी ने माया नाम ज्ञान द्वारा अपने आत्मा को
अर्थात् स्वरूप को प्रवेश किया तिस जगत को बना कर
ब्रह्म ने प्रवेश किया यह दूसरी श्रुति भी कहती है माया,
बयुन, ज्ञान ये तीनों शब्द पर्याय वाचक हैं यह निघण्टु
में लिखा है माया शब्द ज्ञान का पर्याय है ।

यद्यपि आधारभूते आकाशे निर्मितेषु घटा-
दिषु तद्रचनानन्तरमाकाशस्य प्रवेशोनोपपद्यते
तदाधार रूपेणैव तद्रचनाकालमारभ्य प्रवेशत्व
दर्शनात् तथैवापरिच्छिन्नस्वरूपे सर्वव्यापके पर-
स्मिन् ब्रह्मणि श्रीरामेजगद्रचनाधार भूते जग-
त्सृष्टिकालमारभ्य प्रवेशत्वोपपत्तेः जगत्सृष्ट्यन-
न्तरं तत्र तत्प्रवेशवचनं नोपपद्यते तथापि परि-
च्छिन्नमिव दृश्यमानस्य तद्विग्रहस्यापरिच्छिन्न-

त्वज्ञापनाय जगत्सृष्ट्यनन्तरं महत्परिमाणेषु चतुर्दशभुवनेषु रामस्य प्रवेशत्वमुक्तं श्रुत्येत्यव गम्यते ।

यद्यपि आधार भूत आकाश में बने हुए घटादि कों में उनकी रचना के बाद आकाश का प्रवेश नहीं घट सकता है आकाश उनका आधार है। रचना कालही में घटादिकों में आकाश का प्रवेश है तैसेही अपरिच्छिन्न स्वरूप सर्व व्यापक श्री राम जी जगत् के आधार हैं जगत के सृष्टि कालही में प्रवेश उनका है फिर सृष्टि के बाद प्रवेश कहना यह नहीं घट सकता है । इस का समाधान यह है कि श्रीराम जी का विग्रह परिच्छिन्न सदृश देखा जाता है उसके अपरिच्छिन्नत्व जनाने के लिये जगत् सृष्टि के अनंतर महा परिमाण वाले चतुर्दश भुवनों में श्रीरामजी का प्रवेश होना श्रुति कह रही है यह जाना जाता है।

स च विग्रहश्चिन्मयश्चिद्रूपएष चिन्मये-स्मिन् महाविष्णौ चिन्मयस्या द्वितीयस्य । चिन्मयः परमेश्वरः रामचन्द्रश्चिदात्मक इत्येव-मादि श्रुतिभिः विग्रह सहितस्य रामस्य चिद्रूप-

त्वोक्तेः ननु स्वरूपप्रतिपादनपरा एताः श्रुतयः न तु विग्रहपरा इति चेन्न जीवस्यापि चिद्रूपत्वेन रामस्य जीवभिन्नत्व प्रकाशकानामासां श्रुतीनां तदाधिक्य कथनं विना वैयर्थ्यापत्तेः ।

श्रीराम जी का वह विग्रह चिद्रूप है 'चिन्मयेरस्मिन्महाविष्णौ' इत्यादि तापनी श्रुतियों के प्रमाण से विग्रह सहित श्रीराम जी का स्वरूप चिद्रूप है यदि कहो कि ये सब श्रुति केवल स्वरूपही को वर्णन करती हैं विग्रह को नहीं। यह नहीं कहसकतेहो क्योंकि जीवभी चिद्रूपहै इससे श्रीरामजी को जीव से भिन्न प्रकाश करने वाली श्रुतियां जीव से अधिक श्रीराम जी को कहने के बिना व्यर्थ हो जायेंगी। तात्पर्य यह है कि जीव स्वरूप से चिद्रूप है विग्रह सहित नहीं परब्रह्म का विग्रह भी चिद्रूप है यही जीव से ईश्वर का आधिक्य है।

रामस्य जीवेभ्य आधिक्यन्तु तद्विग्रहस्यापि चिन्मयत्वोक्त्योपपद्यते वदति स्फुटं श्रुतिः तद्विग्रहस्यापि चिद्रूपत्वं

मुद्राज्ञानमयीं याम्ये वामे तेजः प्रकाशनम्।

धृत्वा व्याख्याननिरतः चिन्मयः परमेश्वरः॥

इत्यत्र यामे दक्षिणेकरे ज्ञानमयीं मुद्रां धृत्वा वामेकरे तेजः प्रकाशनं घृत्वा मुखतः व्याख्याननिरतः स एवं भूतः चिन्मयः परमेश्वरः अत्र स्वार्थिको मयट् स विग्रहस्य चिद्रूपत्वं दर्शयति।

श्रीरामजीका आधिक्य तभी घटेगा जब उनके विग्रह को भी चिन्मय कहा जायगा 'मुद्रांज्ञानमयींयामे' यह श्रुति विग्रह सहित श्रीराम जी को चिन्मय कह रही है। दक्षिण हाथ में ज्ञानमुद्रा वाम में तेजः प्रकाशन धारण किये हुए मुख से व्याख्यान में निरत परमेश्वर श्रीराम जी चिन्मय हैं यहां स्वार्थ में मयट् है वह विग्रह सहित चिद्रूप कह रहा है।

तथैववेदोपब्रंहणाभूता स्मृतिरपि स विग्रहस्य रामस्यचिद्रूपत्वं वदति।

श्रीशार्ङ्गधारिणं रामं चिन्मयानन्द विग्रहम्।
विरराम महातेजाः सच्चिदानन्द विग्रहः॥

इतिरामस्तवराजे ।

वाराह पुराणेपि ।

सर्वेशाश्वता नित्या देहास्तस्य परात्मनः ।
हानोपादानरहिता नैव प्रकृतिजाः क्वचित् ।
परमानन्दसन्दोहा ज्ञानमात्राश्च सर्वशः ।
सर्वे सर्वगुणैः पूर्णाः सर्वे दोषविवर्जिताः ॥

तैसेही वेद के उपब्रंहण भूत स्मृति भी विग्रह सहित श्रीराम जी को चिन्मय स्पष्ट कह रही हैं श्रीशार्ङ्गको धारण करने वाले चिन्मय आनन्द विग्रह तथा सच्चिदानन्द विग्रह महा तेज वाले श्रीराम जी विराम को प्राप्त हुए। बाराह पुराण में भी कहा है कि परमात्मा के सर्व विग्रह नित्य हैं और शाश्वत हैं। हान उपादान से रहित हैं कोई भी प्रकृति जन्य नहीं हैं किन्तु परमानन्द सन्दोह रूप हैं केवल ज्ञान मात्र हैं और सब विग्रह सर्व गुणों से पूर्ण तथा सर्व दोष विवर्जित हैं।

इति परमात्म देहानां नित्यत्व शाश्वतत्व त्यागग्रहणरहितत्व परमानन्दसन्दोहत्वंचोक्तम्।

तस्मात् श्रुतिस्मृतिप्रमाणात् सविग्रहस्य श्रीराम-स्यापरिच्छिन्नत्वं चिद्रूपत्वं च सिद्धतरमेव। घटा-न्तःप्रवृष्टस्यदीपस्येव जगदन्तः प्रविष्टस्यरामस्य वाह्याभ्यन्तर जगत् प्रकाशकत्वं नस्यादित्या शं-क्याहमानव इति माप्रभातयानवः अकुण्ठितप्र-काशगुणशक्तिः इत्यर्थः अत्र जगद्व्यापकत्व श्रुत्यापि व्याप्त्यभूतस्य जगतः व्यापकात्पृथक् सि-द्धेस्तत्स्वरूप स्थितिप्रवृत्योः श्रीरामाधीनत्वनि-ष्पत्तेः जगतोराम शेषत्वंनिष्पद्यते।

इस प्रकार परमात्मा के देहों को नित्य होना, सर्व काल में विद्यमान रहना प्राकृतपदार्थ के समान त्याग ग्रहण-रहित परमानन्द सन्देहरूप कहा गया इस श्रुति स्मृति प्रमाण से श्रीरामजी को विग्रह सहित अपरिच्छिन्न तथा चिद्रूपत्व सिद्धतर है। घट के भीतर प्रविष्ट दीप जैसे बाहर प्रकाश नहीं करता है इसी प्रकार जगत के भीतर प्रवृष्ट श्रीरामजी भी जगत को बाहर प्रकाश नहीं कर सकेंगे, यह शंका करके श्रुति कहती है 'मानवः' मा कहते हैं प्रभा को तिस प्रभा से सदा नवीन हैं अर्थात् अकुण्ठित प्रकाश

गुणशक्ति वाले हैं। यहां पर जगत व्यापक श्रुति से भी सर्व व्यापक श्रीरामजी से व्याप्तभूत जगत अपृथक् सिद्ध है इससे जगत की स्वरूपस्थिति प्रवृत्ति श्रीरामजी के आधीन है अतएव समस्त जगत श्रीरामजी का ही शेष है यह सिद्ध हुआ।

तदेवंजीवपरमात्मानोः शेषशेषित्वरूपंवीजस्यार्थंनिरूप्याथ बीजविवरणभूतस्या वशिष्टस्यमंत्रस्यार्थं प्रकाशयन् तमेववीजस्यार्थं स्फुटीकरोति। जगत्प्राणायात्मने नमःस्यान्नमस्त्वैक्यं प्रवदेत् प्राग्गुणेनेतीयं श्रुतिः।

इस प्रकार जीव परमात्मा का शेष शेषित्व रूप बीज का अर्थ निरूपण कर अब बीज विवरणभूत अवशिष्ट मंत्र के अर्थको प्रकाश करती हुई उसी बीज के अर्थ को 'जगत्प्राणाय' यह श्रुति स्पष्ट कहती है।

यथाप्राणंविनादेहस्यस्थितिप्रवृत्तिर्नभवति तथा जीवस्थितिप्रवृत्तिरपि श्रीरामंविनानभवति रामधीनस्वरूपस्थिति प्रवत्तोर्जीवस्य रामशेषत्वं तथा छान्दोग्ये चक्षुरादीन्द्रायाणां मुख्यस्यप्राण-

स्यचस्व स्वश्रेष्ठत्वविवादे देहात्प्राणस्योत्क्रमण कालेचक्षुरादीनां निश्चेष्टत्वदर्शनेन तेषांप्राणा-धीन स्वरूपस्थिति प्रवृत्तहेतुकत्वेन प्राणशब्देनो-च्चार्यमाणत्वंश्रूयते। न चक्षूंषि नश्रोत्रणि न मनांसीत्युच्यन्ते प्राणाइत्या चक्ष्यन्ते। तस्मात्-प्राणएवसर्वमिति ।

जैसे प्राण के बिना देह की स्थिति प्रवृत्ति नहीं हो सकती है वैसेही जीव की स्थिति प्रवृत्ति श्रीरामजीके विना नहीं हो सकती। रामाधीन स्वरूप स्थिति प्रवृत्ति होने से जीव श्रीरामजी का शेष है। छान्दोग्यउपनिषत् में चक्षुरादि इन्द्रियों का और मुख्यप्राण का परस्पर विवाद हुआ आपस में अपने अपने को सबोंने श्रेष्ठ बतलाया उस समयमें जब मुख्य प्राण निकला तो चक्षुरादि निश्चेष्ट हो गए इससे उनके स्वरूपकी स्थिति प्रवृत्ति प्राणाधीन होनेसे चक्षु, श्रोत्र मन इत्यादिक नहीं कहे जाते हैं किंतु सबको प्राणही कहते हैं।

तथा सर्वस्यजगतोरामव्याप्यत्वेन रामस्य-जगत् प्राणत्वेन च जगतोरामाधीनत्व सिद्धेःराम-

शब्देनोच्चार्यमाणत्वंनिष्पन्न तरमेवश्रुतयोवदन्ति। सदारामोहमित्येतत्प्रवदन्ति ये नतेसंसारिणो नूनंरामएवनसंशयः सर्वंह्य तद्ब्रह्मश्रयमात्माब्रह्मे- त्येवमाद्या इति।

तिसीतरह सर्व जगत श्रीराम व्याप्य है इस कारण से श्रीरामजी जगत के प्राण हैं इससे जगत को श्रीरामजी के आधीन होनेसे श्रीरामशब्दसे उच्चार्य्यमाण होना सिद्ध है उसीको मैं सदा राम हूँ इस प्रकार जो यथार्थ कहते हैं वे संसारी नहीं हैं किंतु रामही हैं और भी यह सब ब्रह्म हैं यह आत्मा भी ब्रह्म है इत्यादि अभेद श्रुतियां जीव ब्रह्म के भेद होने पर भी ब्रह्माधीन होनेके कारण ब्रह्म शब्दही करके अभेद बोधन कराती है।

जगदात्मने इतिपदंतु जगतोरामशरीरत्वं- ज्ञापयतिवाल्मीकिनाप्युक्तं जगतसर्वंशरीरंते त- थायस्यपृथ्वीशरीरं यस्यआपःशरीरं य आत्मांत- रोयमात्मानवेद यस्यात्माशरीरं य आत्मानमंतरो यमयतिएषतआत्मान्तर्याम्यमृत इत्येवमाद्या- अन्तर्यामि श्रुतयोपिसर्वस्य जगतोपरमात्मशरी-

रत्वंदर्शयंति। तस्मात् जगतोजीवात्मनश्चराम-शरीरत्वंरामस्यतच्छरीरित्वं तदंतर्यामित्वेनतन्नि-यंतृत्वंजगतस्तन्नियम्यत्वं च दर्शितम् । अतो-जगतः रामशेषत्वंसिद्धम् ।

'जगदात्मने' यह पद जगत को श्रीरामशरीर जनाता है। 'जगत्सर्व्वं शरीरंते' यह श्रीवाल्मीकिजी ने भी कहा है। जिसका पृथ्वी शरीर है जिसका जल शरीरहै जो आत्माके भीतर है जिसको आत्मा नहीं जानता है जो आत्मके भीतर प्रेरणा करता है वही तेरा आत्मा अन्तर्यामी अमृत रूप है इत्यादि अन्तर्यामी श्रुतियां भी सर्व जगत को परमात्मा का शरीर कह रही हैं इससे जगत और जीव श्रीरामजी का शरीर है श्रीरामजी उनके शरीरी हैं अंतर्यामी होने से श्री रामजी नियन्ता हैं जगत नियम्य है इससे भी जगत श्रीराम जी का शेष है।

यथाप्रत्यगात्मास्वाधीनस्थिति प्रवृत्तिम-त्स्वशरीरस्य योगक्षेमौकरोति तथापरमात्माश्रीरा-मःस्वशरीरभूतस्यजीवस्य ऐहकामुष्मिकयोगक्षेमं करोतितत्राप्राप्तस्यप्रापणांयोगः प्राप्तस्यरक्षणां-

क्षेमः तत्रैहिकौतौप्रसिद्धौ आमुष्मिकौतौ जीवा नामप्राप्तस्यस्वस्मै प्राप्तकरणांयोगः।

जैसे प्रत्यगात्मा जो जीव वह अपने आधीन स्थिति प्रवृति वाले शरीर का योगक्षेम स्वयं करता है तिसी प्रकार से श्री रामजी अपने आधीन स्वरूपस्थिति प्रवृति वाले जीवों का योगक्षेम स्वयं करते हैं अप्राप्त वस्तुके प्राप्तिको योग कहते हैं और प्राप्त हुए वस्तु के रक्षण को क्षेम कहते हैं। तहांपर इस लोक के भोजन वस्त्रादि के योगक्षेम श्रीरामजी स्वयं करते है यह प्रसिद्ध है मुख्यतः अप्राप्तभूतजो अपने स्वरूप की प्राप्ति को करना यह योग और प्राप्त भूत स्वरूपकी विरोधियों से रक्षा करना यह क्षेम इसको अपने शरण में प्राप्त हुए जीवों का योग क्षेम श्रीरामजी स्वयं करते हैं।

अनेन जीवानामप्राप्तस्य रामस्यप्राप्तिकर्तारामएवेति वोधनेनस्वप्राप्तेरुपायःरामएवत्यतोमुमुक्षु रामप्राप्तेरूपायंरामंज्ञात्वानित्योपायस्योपेयरूपस्यत्र तस्यैवरामस्यचिन्तनंकुर्य्यादितिज्ञापितम् रामप्राप्तस्यजीवस्यसंसारेअनावृत्तिकरणरूपरक्षणांक्षेमः सएवोपायउपेयश्चजीवस्यश्रीराम-

एवेतिज्ञापने नमुमुक्षोरामप्राप्तिउपायः श्रीरामशरणागतिरेवेति ज्ञापितंश्रुत्या । उपायमुपेयंचराममेवज्ञात्वा तदेकोपायत्वेनतिष्ठेदितियत् तदेवशरणागतिरुच्यते । तदुक्तमभियुक्तैः उपायत्वमुपेयत्वमीश्वरस्यैव यद्भवेत् शरणापत्युरित्युक्ता शास्त्रमानाद्विवेकिमिरिति ।

इससे जीवों को अप्राप्त जो श्रीरामजी उनके प्राप्तिके करने वाले वेही हैं यह जनाने से मुमुक्षुवों को श्रीराम जीके प्राप्तिके लिये उन्हीं को उपाय समझना चाहिये इससे उपाय उपेयरूप श्रीरामजी को जानकर सदा श्रीरामजी का चिंतवन करैं यह जनाया । आप्राप्त रूप श्रीरामजीको प्राप्त हुए जीव की संसार में अनावृत्ति रूप अर्थात् जिसमें फिर जीव संसार में न आवै यह रक्षा रूप क्षेम श्रीरामजी करते हैं इससे जीव के उपाय उपेय श्रीरामही हैं यह जनाने से मुमुक्षुको श्रीराम जीके प्राप्तिके लिये एक मात्र शरणागतिही उपाय है यह श्रुतिने जनाया । उपाय उपेय रूप श्रीरामजी को जानकर तदेक निष्ठ हो जाना यही शरणागति कहलाती है। इसीको अभियुक्त लोगोंने कहा है श्लोक का भी वही अर्थ है जो कह आये हैं ।

तस्माद्रामप्राप्ति कामोजीवोयावज्जीवंरा-मैकोपायत्वेनतिष्ठेदिति जगदात्मनेइतिपदस्य सारार्थनिदर्शनेनवीजार्थः प्रपंचितः।

तिमसे श्रीरामजीकी प्राप्ति कामना वाले जीवको सर्वो-पाय शून्य होकर श्रीरामहीजीको एक उपाय समझकर उन्हीं के चरणोंमें प्रेम करना सदा चिन्तवन करना यह जीवका कर्तव्य है।

रामायइति रामप्रातिपदिकात् परायाचतु-र्थ्यातादात्मकेत्युत्तरतना श्रुतिर्वदिति । पंचरा-त्रेच । चतुर्थीदीयतेचात्रनादर्थे कमलोद्भवइति । भगवतैवोक्तम् । अयंजीवःतस्मैरामाय इतिचतु-र्थ्यर्थः॥

अब रामाय इस पदका अर्थ करते हैं श्रीरामशब्द प्राति पदिक से पर जो चतुर्थी है वह तादात्मिका है यह आगेकी श्रुति कहती है पंचरात्र में भगवानने ब्रह्मासे कहा है कि हे कमलोद्भव इस षडक्षर तारक मंत्र राजमें जो चतुर्थी है वह तादर्थ्य में है इससे तिस श्रीरामजीके लिये यह जीव है यह चतुर्थीका अर्थ है।

तदात्मनोजीवस्य यद्भगवत्कैंकर्य्यलक्षणं कर्मतत्तादात्म्यंतद्बोधयतीतितादात्मिका यद्वा-तस्मैरामायरामकैंकर्याय अयंजीवः इतितदात्मा-तमिममर्थंवोधयतीति तादात्मिकाइत्येवं तादात्मि-कायाः तादार्थिकायाश्च चतुर्थ्याएकएवार्थ उपपद्यते ॥

तदात्मा अर्थात जीवका भगवत कैंकर्य लक्षण जो कर्म वह तादात्म कहा जाता है उसको जो बोध कराने वाली उसे तादात्मिका कहते है। अथवा तिस श्रीरामजीके अर्थात् श्रीराम कैंकर्य के लिये जो यह जीव उसको कही तदात्मा इस अर्थ को जो बोधन कराने वाली चतुर्थी उसको तादा-त्मिका कहते हैं इस तरह श्रुति में तादात्मिका चतुर्थी कही गई और पंचरात्र में तादर्थिका पर दोनों का अर्थ एकहीहै।

तस्मैइति तच्छव्दःपूर्वश्रुत्युक्तस्यरामस्यप-रामर्शकः मंत्रेनमःशव्दोजीवस्यवाचकः जीववा-चिनमोनामेत्युत्तरतनश्रुतेः तदन्वयस्तुनमोजीवः जगत्प्राणायजगत्स्वामिने तच्छेषिणोरामाय रा-

मकैंकर्यार्थमित्यर्थः तदेवंक्रियाकर्मेज्यकर्तृणाम-र्थमंत्रोवदत्यथेतिमंत्रार्थोपक्रमश्रुत्युक्ताःक्रियाक-र्मेज्यकर्तृरूपाश्चत्वारोर्थाः मंत्रस्योक्तास्तेश्चन-याश्रुत्यास्फुटीकृताः।

तस्मै यह तत् शब्द पूर्व श्रुति में कहे हुए श्रीरामजी का परामर्शक है मंत्र में नमः शब्द श्रुति सम्मत में जीव वाचक है 'जीव वाचि नमोनाम' यह आगे की श्रुति कहेगी इससे उसका अन्वय इस तरह है कि नमः शब्द वाच्य जीव जगत्प्राण जगत्स्वामी जीवों के शेषी श्रीरामजी के लिये है अर्थात श्रीरामजी के कैंकर्य्य वास्ते है । इस प्रकार क्रिया कर्मेज्य कर्तृणां' यह मंत्रार्थ के उपक्रम में कही हुई श्रुति में क्रिया, कर्म, इज्य, कर्ता ये चार अर्थ मंत्र के कहे गये। वे सब इस श्रुति से स्पष्ट किये गये हैं ।

तत्र क्रियारामैकोपायत्व व्यवसायात्मिका मनोधर्मरूपा तच्चिन्तनरूपा चित्तव्यापाररूपाच कर्म श्रीरामकैंकर्यलक्षणं चतुर्थीवोध्यं। ईज्यः-रेफवाच्यो श्रीरामः कैंकर्य्यात्मकेन कर्मणापूज्यः। कर्ताश्रीरामकैंकर्यात्मकस्यकर्मणः कर्तातच्छेष-

भूतोनमःपदवाच्योजीवइति तएवचत्वारोऽर्थाज्ञेयाः ।

तहांपर रामहीजी को अपना उपाय समझना यह व्यवसाय रूप मनका धर्म क्रिया है। अथवा चित्तका व्यापार श्रीरामजी का चिन्तवन करना यह क्रिया है। चतुर्थीसे बोध्य श्रीरामजी का कैंकर्य करना यह कर्म है। रेफ वाच्य श्रीरामजी ईज्य हैं अर्थात कैंकर्य रूप कर्मसे पूज्य है। और श्रीरामजीके कैंकर्य रूप कर्म को करने वाला श्रीरामजीका शेषभूत नमः पद वाच्य जीवकर्ता है इस तरह क्रिया, कर्म ईज्य, कर्ता ये चार अर्थ मंत्र में मुमुक्षुको जानना चाहिये।

तद्विरोधिनोऽप्यत्रमंत्रेज्ञातव्याः। तत्ररामादन्यत्र स्वशेषित्वबुद्धिः परस्वरूपविरोधिनीस्वस्यरामान्यशेषत्व बुद्धिः स्वस्वरूपविरोधिनीरामादन्यत्रप्राप्तिउपायबुद्धिः उपायविरोधिनी रामकैंकर्यादन्यत्रभोग्यत्व बुद्धिः फलस्वरूपविरोधिनी इत्येवमन्येपितत्तद्विरोधिन ऊह्याः तेचहिंसामत्सर, कामक्रोधलोभादिधर्माः प्राप्तिविरोधिनो ज्ञेयाः सर्वेजीवाः श्रीरामशरीरभूतास्तेषां हिंसादि

करणेनश्रीरामद्रोहित्वात्तेषां श्रीरामप्राप्तिर्नभवती ति एवंचत्वारः पूर्वोक्ताः एकश्चायंतत्तद्विरोधि रूपः इत्येते पंचार्थाः मंत्रविज्ञैः ज्ञातव्याइत्युक्त मभियुक्तैः ।

तत्तद्विरोधीभी इस मंत्र में जानना चाहिये । श्रीराम जीको छोड़कर दूसरे को शेषी मानना यह बुद्धि परस्वरूप-विरोधिनी है । श्रीरामजीके शेषत्व को छोड़कर किसी दूसरे का शेष अपने को समझना यह बुद्धि अपने स्वरूपकी विरो-धिनी है । और श्रीरामजीको छोड़कर दूसरेको अपना उपाय मानना यह बुद्धि उपाय-विरोधिनी है । एवं श्रीरामजीकी सेवा को छोड़कर और कुछ भोग्य समझना यह बुद्धिफल-विरो-धिनी है । इसी तरह और भी विरोधी जानना चाहिये वे हिंसा, मत्सर, काम, क्रोध, लोभादि सब प्राप्ति के विरोधी हैं तात्पर्य यह है कि सब जीव श्रीरामजीके शरीर हैं उनके साथ हिंसा द्रोहादि करने से वह श्रीराम द्रोही होता है उस द्रोह करने वाले को श्रीरामजीकी प्राप्ति नहीं होती है । इस प्रकार चार पहले के और एक यह तत्तद्विरोधी रूप ये पांच अर्थ मंत्रार्थ के जानने वाले को ज्ञातव्य हैं यह अभियुक्त पुरुषों ने कहा भी है ।

प्राप्यस्यब्रह्मणोरूपं प्राप्तुश्चप्रत्यगात्मनः ।
प्राप्त्युपायंफलंप्राप्तेः तथाप्राप्तिविरोधिनः ॥
ज्ञातव्यमेतदर्थानां पंचकं मंत्र वित्तमैः ॥

प्राप्य जो ब्रह्म तिसके स्वरूपको। प्राप्ता जीवात्माके स्वरूप को । और प्राप्ति का उपाय शरणागति। प्राप्ति का फल कैंकर्य। प्राप्ति के विरोधी । पांच प्रकार के जो पहले कह आये इन पांच अर्थों को मंत्र के जानने वाले को ज्ञातव्य है।

एवंच मंत्रार्थ विज्ञानेन सर्ववेदेतिहासादर्थ विज्ञःसन् श्रोत्रियोभूत्वा श्रीरामैकोपायःसन् तच्चितनैकद्वारातन्निष्ठोभवति। परीक्षलोकान्कर्मचितान् ब्राह्मणोनिर्वेदमायान् नास्त्यकृतःकृतेन तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठं तस्मैसउपसन्नाय प्रशान्तचित्तायजितेन्द्रियाय येनाक्षरंपुरुषंवेदसत्यं प्रोवाचतांतत्वतो ब्रह्मविद्यामितिश्रुत्युक्तो गुरुस्तत्पूज्यश्च।

इस तरह मंत्र के विज्ञान से सर्व वेद इतिहासादि का अर्थ जानने वाला वह पुरुष होजाता है । श्रीरामजी को एक उपाय समझकर श्रीरामजीके चिन्तन द्वारा तन्निष्ठ हो जाता है। श्रुति का अर्थ है कि कर्म से संचय किये हुए लोकों की परीक्षा से अनित्यता जानकर ब्राह्मणको वैराग्य शील हो जाना चाहिये। किये हुए कर्मसे अकृत मोक्ष नहीं प्राप्त हो सकता है मोक्ष ब्रह्मके जाननेही से होता है। अतः उस ब्रह्मके जानने के लिये समिधा को हाथ में लेकर श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरु के पास में जाय। प्राप्त हुए प्रसन्न चित्त जितेन्द्रिय शिष्य के लिये आचार्य्य उस ब्रह्मविद्या का उपदेश करते हैं जिससे वह अक्षर पुरुष जाना जावै। इत्यादि श्रुति में कहा हुआ गुरु शिष्य को पूज्य है।

तस्मात् श्रीरामैकोपायत्वेन तदेकचिन्तनलक्षणया ब्रह्मविद्ययारामाख्यं ब्रह्मप्राप्नुयादिति मंत्रार्थपरश्रुतीनांतात्पर्यौर्थो मुमुक्षिभिर्ज्ञातव्यः।

श्रीरामजीको ही उपाय समझकर उन्हींके एक मात्र चिन्तन रूपा ब्रह्मविद्या से श्रीराम संज्ञक परब्रह्म को जीव प्राप्त होता है यह मंत्र के अर्थ में तत्पर श्रुतियों का तात्पर्य्य रूप अर्थ मुमुक्षुओं को जानना चाहिये।

राम ब्रह्मचिन्तनैकलक्षणा ब्रह्मविद्याभव-तीत्यत्र किंप्रमाणमितिचेत् अथयया तदक्षरम-धिगम्यते। इतिश्रुतिरेवात्रप्रमाणं। अधिगम्यते-ज्ञायतेतदक्षरं ब्रह्मययासैव ब्रह्मविद्येतितात्पर्यः येनेतिलिंगविव्त्तयःछान्दसः।

श्रीराम ब्रह्म चिंतन रूपाही ब्रह्म विद्या है इसमें क्या प्रमाण है ऐसा यदि कोई कहै तो 'यया तदक्षर अधिगम्यते' यही श्रुतिही उसमें प्रमाण है ब्रह्म जिसमे जाना जाय वही ब्रह्म विद्या है 'येन यह लिंग वित्त्यय' छान्दस है।

वेदार्थेपि ब्रंहणभूतायांगीतायां सर्वज्ञेन-भगवता वेदैश्चसर्वैरहमेववेद्योवेदांतकृद्वेदविदेव-चाहमिति स्वैकचिन्तनलक्षणाया भक्त्यपरपर्य्या-ययाविद्ययाअक्षर शब्दवाच्यस्यस्वस्यैववेद्यत्वं तयास्वप्राप्तिश्चोक्ता। भक्त्यामामभिजानातियाा-वान्यश्चास्मितत्वतः। ततोमांतत्वतोज्ञात्वाविशते तदनन्तरमिति। भक्त्यात्वनन्ययाशक्यअहमेवं विधोर्जुन। इत्यादिभिश्चानन्यभक्त्यैवस्व-

तत्वज्ञानस्य स्वप्रवेशपदोपात्तायाःस्वप्राप्तेश्चक-
थनेनस्वभक्ते ब्रह्मविद्यात्वंज्ञापितम् ।

वेदार्थोप ब्रंहण भूता गीता में भगवान ने सर्व वेदों से हमी जानने योग्य हैं वेदान्त कर्ता तथा वेदज्ञ हमी हैं इस तरह कहकर भक्त्यामां अभिजानाति इत्यादि वचन से अनन्य भक्तिही से हम जानने योग्य हैं यह कहा। इससे अनन्य भक्ति से अपने तत्व का ज्ञान तथा प्रवेश रूपा प्राप्ति को कह कर अपनी भक्ति को ही ब्रह्मविद्या जनाया।

तस्मात् भक्तिशब्दवाच्यैव ब्रह्मविद्याश्रु-
तिस्मृतिसम्मता ययामांतत्वतोजानाति इतित-
त्वतोज्ञातुंतत्वतः प्रवेष्टुं चाहंशक्यःसापराभक्ति-
पर्यायरूपाअनन्यभक्तिरितिगीतानिरुक्तेस्तात्पर्य्यः

तस्मात भक्ति शब्द वाच्याही ब्रह्म विद्या श्रुतियोंके सम्मत में हैं जिससे हमको तत्व से जानता है इस तरह यथार्थ जानकर जिससे हम प्रवेश करने के योग्य हो सकते हैं अर्थात जिससे जीव हमारे में प्रवेश करता है वही परा-भक्ति अनन्य भक्ति है यह गीता का तात्पर्यार्थ है।

सैषाश्रीरामब्रह्मसततस्मरण चिन्तनबुद्धि-

निवशन मनोभावनात्मिका भगवदनन्यभक्तिः सर्ववेदवेदान्तेतिहासपुराण संहितास्मृतीनां च सारार्थेयं भगवत्पराभक्तिरनन्यभक्तिरिति गीतो-पक्रमादिलिंगैरवगम्यते। अलमतिविस्तरेण प्रकृ-तमनुसरामः।

यह श्रीरामपरब्रह्म का निरन्तर स्मरण चिंतन बुद्धि निवेशन मनोभावना रूपा भगवदनन्य भक्ति सर्व वेद वेदा-न्त इतिहास पुराण संहिता, स्मृति इत्यादिकोंका सारार्थ है। पराभक्तिही अनन्य भक्ति है यह गीता के उपक्रमादि लिंगों से जाना जाता है। विस्तार को समाप्त करते है प्रकरण गत अर्थ को दिखाते हैं।

नमस्त्वैक्यंप्रवदेत् प्राग्गुणेनेतितेषु ततो-मानवोमाययाअधात्। इति पूर्वश्रुत्युक्तेन श्री-रामनिष्ठव्यापकत्वगुणेन व्याप्यभूतस्यसर्वस्य च-राचरस्यत तद्व्यापकरामार्थकत्वसिद्धे र्व्याप्यस्व-रूपस्थितिप्रवृत्त्यो र्व्यापकाधीनत्वोपपत्ते श्च स-र्वा व्यापकस्यरामस्यजगतः तदव्यापकत्वेनतद

पृथक् सिद्धेस्तद्रूपोहमित्येव मात्मपरमात्मनो रैक्यंनमः शब्दवाच्यो जीवोवदेत्ब्रूयात् ।

श्रुति का अर्थ है कि नमः शब्द वाच्यजीव परमात्मा के साथ अपना ऐक्य अनुसन्धान करै 'तेषु ततो मानवो मायया अधात्' इस पूर्व श्रुति के कहे हुए श्रीरामजीके व्यापक गुण से अपने को ऐक्य मानैं तात्पर्य्य यह है कि व्याप्तभूत समस्त चराचर जगत व्यापक रूप श्रीरामजीसे पृथक सिद्ध नहीं होसकता है क्योंकि व्यापक की स्वरूप स्थिति प्रवृत्ति व्यापक के आधीन होती है श्रीरामजी सर्व व्यापक हैं जगत उनका व्याप्यहै। इस कारण जगत श्रीरामजीसे पृथक नहीं हो सकता है। इस प्रकार अपनी स्थिति प्रवृत्ति श्रीराम जीके आधीन समझ कर नमः शब्द वाच्य जीव को इस तरह आत्म परमात्मा का ऐक्य कहना चाहिये।

अत्रायमाशयः यथा जलनिधौपतितस्तूल कणोजलेन वहिरन्तरव्याप्तःस्वेनरूपेण न दृश्यते अपितु तस्यजलरूपेण दर्शनं जलशब्देनोच्चार्य्य माणत्वं तथारामेण वहिरन्तर्व्याप्तोजीवोरामव्याप्यत्वेन रामरूपत्वंप्राप्तएवाज्ञानेन विस्मृतस्वरूपः

नमस्त्वैक्यंप्रवदेदिति श्रुत्युपदेशेनविशिष्टविशे-
षेसति स्वव्यापकस्वविशेष्यभूत रामरूपएवसन्
यथास्वयं नप्रकाशेत् तथास्वस्थितिंकुर्य्यात्रामोहं
ब्रह्मैवाहमस्मीत्येव मात्मपरमात्मनोरैक्यंजानी-
यात्।

इसका तात्पर्य यह है कि जैसे जलमें पड़ा हुआ रुई
का कण भीतर वाहर जल व्याप्त होनेसे वह जलसे पृथक्
रहने परभी अपने स्वरूप से नहीं देख पड़ता है किंतु जल
रूपही कहा जाता है इसी तरह जीवके वाहर भीतर श्रीराम
जी व्याप्त हैं इस हेतु से श्रीरामजी का यह व्याप्य है अत-
एव श्रीरामरूप है। अज्ञान से अपने स्वरूप को भूल रहा है
आचार्य द्वारा 'नमस्त्वैक्यं प्रवदेत्' इत्यादि श्रुतियों के उप-
देश से विशिष्ट विशेष होने पर अपनेमें व्यापक विशेष भूत
श्रीराम रूपही है अपना कुछभी अभिमान न रक्खै इस
तरह रामोहं ब्रह्मैवाहं आत्म परमात्माकी एकता जानै अर्थात्
ब्रह्मसे पृथक होने पर भी बाहर-भीतर ब्रह्म व्याप्त है इससे
जीव को भी ब्रह्म कह सकते हैं।

विशिष्ट विशेषत्वं नामविशेषणविशेषयोः
जीवपरमात्मनोर्वैशिष्ट्यं तयोविशेषणबिशेष्य-

त्वंतुज्ञापितंभगवतागीतायां। भूमिरापोनलःवायुः खंमनोबुद्धिरेवच। अहंकारइतीयंमेभिन्नाप्रकृतिरष्टधा॥ अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिंविद्धिमेपराम्। जीवभूतांमहाबाहोययेदंधार्यतेजगत्॥ अत्रेतीयमष्टधाप्रकृतिर्मदीया तथा जीवभूताप्रकृतिरपि मदीयेत्येवं विद्धि इतिप्रकृतिजीवयोरुभयोः स्वकीयत्वोक्त्यास्व विशेषणत्वंज्ञापितम्।

विशेषण विशेष्यभूतजीव परमात्माके वैशिष्ठ्याकोविशिष्टविशेषत्व कहते हैं। जीवविशेषण है परमात्मा विशेष्य है इसको भूमिरापोनलः वायुः यहां से लेकर 'ययेदंधार्यते जगत्' यहां तक गीतामें भगवानने कहा है। यहांपर अष्टधा प्रकृति मेरी है तथा जीव भूता भी प्रकृति मेरी है यह कहने से प्रकृति और जीव को अपना विशेषण जनाया।

यथा स्वीयेन द्रव्येणद्रव्यवान् स्वकीयेन ज्ञानेन ज्ञानवान् स्वकीयेनपुत्रेण पुत्रवानुच्यते तथा भगवानपि स्वकीययाप्रकृत्या प्रकृतिवान् स्वकीयैर्जीवैर्जीववान् इत्यादि शब्दवाच्योभवतितस्मा-

त्परमात्मनो विशेष्यत्वं प्रकृतजीवयोस्तद्विशेष-
णात्व मनादिसिद्धमेव।

जैसे अपने द्रव्य से द्रव्यवान् अपने ज्ञानसे ज्ञानवान् अपने पुत्रसे पुत्रवान् पुरुष कहा जाता है तिसी तरह भगवान् भी अपनी प्रकृति से प्रकृतिवान् अपने जीवोंसे जीववान् इत्यादि शब्दवाच्य होते हैं तस्मात् परमात्मा विशेष्य है प्रकृति जीव उसके विशेषण हैं यहसिद्धांत अनादि सिद्धा-
न्त है।

यथा त्रिवृत्करणे नाप्तेजोविशिष्टापिपृथ्वी वैशेष्यात् पृथ्वीत्युच्यते तथा प्रकृतिजीवविशिष्ट मपिब्रह्म ब्रह्मणोवैशेष्यात्केवलं ब्रह्मवाचकैःशब्दैः श्रुतिस्मृतिभिरभिधीयते ब्रह्मवाइदमग्रआसीत्स-
देवसौम्येदमग्रआसीत् आत्मावाइदमग्रआसीत् सर्वंखल्विदंब्रह्म सर्वंह्येतद्ब्रह्म ब्रह्माहमस्मिअहं-
ब्रह्मास्मिरामोहं अत्ररामजीवयोः ब्रह्मजीवयोश्च रामस्यब्रह्मणश्च प्राधान्यात् रामशब्देन ब्रह्मशब्दे नचाभिधानं तथा पारमार्षसूत्रम् वैशेष्यात्तदवा-
दस्तद्वादइति।

जैसे स्मृति पुराणों में पंची करण है तैसेही श्रुतियोंमें त्रिवृत करण है उस त्रिवृत करण से जल तेज विशिष्टभी पृथ्वी केवल पृथ्वी ही कही जाती है और पृथ्वी जल से विशिष्ट तेज केवल तेज कहा जाताहै वैसे जलकोभी पृथ्वी और तेज से विशिष्ट होने पर भी जलही कहते हैं क्योंकि उनमें अपना अपना अंश विशेष है तैसेही विशेष होने के कारण जीव प्रकृति को भी ब्रह्मही कहते हैं क्योंकि ब्रह्म उनमें विशेष है। जैसे 'ब्रह्म वा इदं अग्रे आसीत' अहंब्रह्मास्मि, सदा रामोहं इत्यादि श्रुतियों में श्रीरामजीका और जीव का ब्रह्म और जीवकाश्रुतिअभेदवतलातीहै। ब्रह्मैवाहमस्मि' इसमें ब्रह्म प्रधान है 'सदा रामोहं' इसमें श्रीरामजीका प्राधान्य है इसीसे श्रुति अभेद बोधन करा रही है यही विशिष्टा द्वैतका सिद्धान्तहै इसमें परमऋषि श्रीव्यासजीका सूत्रप्रमाण है 'वैशेष्यत्तद्वादस्तद वाद इति'।

अथराममन्त्रस्थस्यनमः शब्दस्यजीववाचकत्वं रामशब्दस्यपरमात्म वाचकत्वंचतुर्थ्यास्तादात्मिकत्वं श्रुतिर्वदति। जीववाचिनमोनाम चात्मारामेतिगीयते। तादात्मिकायाचतुर्थी तथा चायेति कथ्यते। नमइतिनामजीववाचि रामेति-

प्रातिपदिकेन आत्मा परमात्मागीयते कथ्यतेजी-
वस्यनमःपदार्थत्वात् अत्रत्यमात्मपदंपरमात्मपरम्
अथरामायेत्यत्र वर्तमानायाश्चतुर्थ्याः अर्थमाह ता-
दात्मकेति ।

अब श्रीराम मंत्र में स्थित जो नमः शब्द वह जीव वाचक है और राम शब्द परमात्म वाचक है चतुर्थी दोनों के तादात्म्य को कहती है यह श्रुति कह रही है। जीव वाचि इत्यादि से नमः यह जीव वाची है और राम इस प्रातिप-दिक से आत्मा ही परमात्मा कहा जाता हैं । जीव नमःपद का अर्थ है इससे यहां पर आत्म पद परमात्म परक है और रामाय यहां पर वर्तमान जो चतुर्थी उसके अर्थ को श्रुति कहती है तादात्मिका इत्यादि से ।

तथा च सति नमोरामपदयोर्जीव परमा-
त्मपरत्वेसति याचतुर्थीआयइतिकथ्यते सातादा-
त्मिका यद्रूप्यायेति न चतुर्थी तथापिचतुर्थी
संबंधविकारित्वात् चतुर्थीयुक्ता ।

इस तरह नमः और राम ए दोनों पद जीव परमा-
त्मा परक हैं अतएव राम पद से पर आय यह जो चतुर्थी

विभक्ति है वह तादात्मिका है। यद्यपि आय यह चतुर्थी नहीं है चतुर्थी ङे है तथापि चतुर्थी सम्बन्धी विकार अर्थात् ङे का आय आदेश है इससे आय भी चतुर्थी ही कहा जायगा।

अस्यषडक्षरतारकब्रह्मसंज्ञस्यमंत्रस्यवाच्यः श्रीरामएवनान्योतोयं मंत्रो रामस्यैववाचकइति वदतिश्रुतिःमंत्रोयंवाचकोरामोवाच्यःस्याद्योगए-तयोः। फलदश्चैवसर्वेषां साधकानां न संशयः।

इस षडक्षर तारक ब्रह्म संज्ञक मंत्रके वाच्य श्रीराम जीही हैं दूसरा नहीं। अतः यह मंत्र श्रीरामजी का ही वाचक है यह अग्रिम श्रुति कहती है यह मंत्र वाचक है और श्री रामजी वाच्य हैं वाच्य और वाचक दोनों का योगही साधकों का फल देने वाला है इसमें संशय नहीं है।

अयं मंत्रोवाचकः रामश्चवाच्यः। ननुमंत्र मात्रमनुष्ठेयंकिंतदर्थानुसंधानेन अर्थमात्रंवानु-संधेयं किंमंत्रानुष्ठानेनेत्यतआह फलदःस्यात् योग एतयोरिति एतयोर्मंत्रार्थानुसन्धान मंत्रानुष्ठानयो र्योगः सर्वेषांसाधकानांफलदः। मोक्षफलदइत्यर्थः

चकारादकामितभोगदश्च एवशव्दात् फलदोभ-वत्येवनसंशयः इतिउक्तार्थेसंशयो न कर्तव्यइत्य-र्थकः। यद्यपिमंत्रस्यैकैक मात्रानुसन्धानेनतदु-च्चारणे न वा पापानां क्षयादिकंभवति तथापि तयोर्योगएवमोक्षफलदो नान्यइतिभावः। उक्तमर्थं दृढ़यति न संशय इति।

यह मंत्र वाचक है और श्रीरामजी वाच्य है यदि कहो कि मंत्र मात्रही अनुष्ठय है उसके अर्थानुसधान से क्या कयोजन है अथवा अर्थ मात्रही का अनुसंधान करना मंत्रानुष्ठान से क्या प्रयोजन है यह शंका करके श्रुति कहती है कि इन दोनों का योगही फल के देने वाला है तात्पर्य्य यह है कि मंत्र के अर्थ का अनुसंधान और मंत्र का जप इन दोनों का साथ साथ होनाही साधकों को मोक्ष फल दाता है चकार से विना चाहे भोगभी देता है यह जनाया अर्थात भुक्ति मुक्ति दोनी ही का देने वाला है । 'एवकार' फल देने की दृढ़ता को जनाता है 'न संशयः' यह पद उक्त अर्थ में सन्देह न करना चाहिये इसका बोधक है यद्यपि मंत्र की एक एक मात्रा के अनुसन्धान से अथवा उच्चारण से सब पापों का विनाश होता है तथापि इन दोनो का योगही

मोक्ष फलका देने वाला है दूसरा नहीं 'न संशयः' यह कहे हुए अर्थ को दृढ़ करता है ।

ऋतेज्ञानान्नमुक्तिरितिश्रुतिः ब्रह्मज्ञानंविना मुक्तिर्नभवतीतिवदतितद्विरुद्धं मंत्रोपासनान्मुक्ति वचनं नोपपद्यते इत्याशंक्यऋतेज्ञानात् न मुक्ति रिति श्रुतेर्ब्रह्मापरोक्षज्ञानात् ब्रह्मसाक्षात्कारात् ऋतेनमुक्तिर्भवतीत्यर्थकत्वात् सब्रह्मसाक्षात्कारो मंत्रजपाद्भवतीत्यतोमंत्रोपासनान्मुक्तिवचनं ऋते-ज्ञानान्नमुक्तिरिति श्रुतिविरुद्धं न वोधयति इति दर्शयतिश्रुतिः ।

'ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः' यह श्रुति, 'ब्रह्मज्ञान विना मुक्ति नहीं होती है' यह कह रही है इस श्रुति के विरुद्ध मंत्रोपासना से जो मुक्ति का वचन है वह नहीं घट सकेगा इस प्रकार शंका करके 'ऋतेज्ञानात्' इसका तात्पर्य्य ब्रह्मके अपरोक्ष ज्ञान में है अर्थात ब्रह्मके साक्षात्कार से मोक्ष होता है उसके विना नहीं और वह ब्रह्म साक्षात्कार मंत्र के जप से होता है अतः मन्त्रोपासना से जो मुक्ति वचन है । वह 'ऋते ज्ञानान्नमुक्ति' इससे विरुद्ध नहीं है उसी के तात्पर्य्य को

कहती है। इसको आगे की श्रुति दिखलाती है।

यथा नामीवाचकेन नाम्नायोभिमुखोभवेत्
तथा बीजात्मको मन्त्रोमन्त्रिणोभिमुखोभवेत्।
अस्यार्थः नामास्यास्तीतिनामी नामवान् नामवाच्योयःकश्चिदपिप्राणी स यथास्ववाचकेननाम्ना कीर्तमानो विमुखोपि अभिमुखोसन्मुखो भवति तथा बीजात्मकोमन्त्रः। एकाक्षरो वा वन्हिबीज आत्मनिशरीरेयस्य स बीजात्मकः षडक्षरोमन्त्रः मन्त्रिणः इति कर्मणिषष्ठी मन्त्रिणां मन्त्रवाच्यं रामं अभिमुखयति सन्मुखी करोतीत्यभिमुखः स्व वाच्यंरामं मन्त्र जपपरस्य सन्मुखीकरोति तत्साक्षात्कार हेतुर्भवतीत्यर्थः।

जैसे नामी पुरुष अपने वाचक नाम से सन्मुख होता है उसी तरह बीजात्मक यह मंत्र, मंत्र के देवता श्रीरामजी को मंत्र जप करने वालें के सन्मुख कर देता है यह श्रुतिका अक्षरार्थ है स्पष्टार्थ यह है कि नाम जिसका हो उसे नामी कहते हैं नामवान् अर्थात नाम वाच्य जो कोई प्राणी है वह

अपने नाम से जब कीर्तित होता है तब नाम लेने वाले से विमुख होने पर भी सन्मुख होजाता है उसीतरह बीजात्मक एकाक्षर मंत्र अथवा वन्हिबीज आत्मा शरीर में है जिसके ऐसा बीजात्मक षडक्षर मंत्र स्ववाच्य श्रीरामजी को सन्मुख कर देता है अर्थात् जप करने वाले पुरुष को श्रीरामजी के साक्षात्कार का हेतु यह मंत्र है।

तदेवंनवभिः श्रीरामतापनीयश्रुतिभिरुक्तम् श्रीराममन्त्रार्थं पंचरात्रेराममंत्रपराणिवचनानि प्रदर्शयन्ति महित्वंमन्त्रराजस्य साक्षाद्गिरिजापतिः। जानातिभगवान्छंभुः ज्वलत्पावकलोचनः चतुर्थीदीयतेचात्र तादार्थे कमलोद्भव। अभ्येति ते नमामेवसंत्यज्यान्यत्प्रयोजनम् ॥ साधनान्तर संत्यागोनमः शब्दोहिशंसति। अनेनशरणापत्तिः परमैकान्तिनांमता इत्यादयः श्लोकाः संति।

इस तरह श्रीरमतापनी की नव श्रुतियों से कहे हुए मंत्रार्थ को पंचरात्र में भी श्रीराम मंत्र के वर्णन करने वाले वचन दिखला रहे हैं श्रीमन्नारायणजी का वचन ब्रह्माजीसे है कि इस षडक्षर तारक मन्त्र का माहात्म्य ज्वलत्पावक-

लोचन गिरिजापति भगवान शंभुजी यथार्थ रूप से जानते हैं हे कमलोद्भव इस मन्त्र में जो चतुर्थी है वह तादर्थ में दी गई है अर्थात् जीव का प्रयोजन श्रीरामजी का कैंकर्यही है अतः यह जीव श्रीरामजी ही के लिये है तिस कारण अन्य प्रयोजन को त्याग कर इस मन्त्र के जप में पर साधक हमको अवश्य प्राप्त होता है और मन्त्र में जो नमः शब्द है वह साधनान्तर के त्याग को कह रहा है अर्थात् उपायान्तर छोड कर यह जीव श्रीरामजी के शरण होवै इससे परमैकांती अनन्य श्रीरामोपासक उत्तमाधिकारी चेतनों के लिये शरणागति ही प्रधान है इत्यादि श्लोक पंचरात्र के ब्रह्मसंहिता में हैं।

अथेदानीं मन्त्रार्थव्याख्यातृभिः पूर्वाचार्यैः प्रदर्शितोर्थःप्रदर्श्यतेतत्रास्मिन्मंत्रे षट्पदानिदर्शितानि र् इति आ इति म् इतिवीजस्य त्रीणिपदानि रामायइति न इति मः इति वीजविवरणभूतस्यमंत्रशेषस्यत्रीणिपदानीत्येवं षट्पदानिसंति तत्रप्रथमंपदंरकारश्चतुर्थ्यंतः षष्ट्यर्थागर्भश्चत्र्अव्ययत्वात् लुप्तविभक्तिकः। आ इत्यपिलुप्तविभक्तिकःप्रथमांतःनिषेधार्थः तद्विवरणस्य नमइति

नकारस्य निषेधार्थकत्वात् म् इति हलमकारः प्रथमान्तोजीववाचकः। मनज्ञानेमदीहर्षेमसीपरिमाणे इतिधातुत्रयनिष्पन्नत्वात् जीवस्वरूपस्य ज्ञानानन्दरूपत्वज्ञानानन्दगुणाकत्वाणुपरिमाणत्वबोधकः।

मंत्र के व्याख्यान करने वाले पूर्वाचार्यों ने मंत्र के छ पद दिखलाये हैं 'र्, आ, म्' ये तीन पद वीज के हैं 'रामाय, न, मः ये वीज विवरण भूत मंत्र शेष के तीन पद हैं इस तरह छ पद हुए तहां पर र्, कार प्रथम पद वह चतुर्थ्यंत है क्योंकि उसका विवरण भूत रामाय यह चतुर्थ्यंत पद देखा जाता है षष्ठी के अर्थ को भी अपने भीतर लिये है अव्यय होने से विभक्ति का लोप है आ यह द्वितीय पद भी लुप्त विभक्तिक प्रथमांत है इसका अर्थ निषेध है क्योंकि नमः इस पदका न कार निषेधार्थकहै वह आकारका विवरणभूत है तथा म् यह हल मकार प्रथमांत जीव वाचक है। मन ज्ञानेमदी हर्षे मसी परिमाणे इन तीन धातुवों से म् यह निष्पन्न होता है तस्मात् ज्ञानानन्द स्वरूप और ज्ञानानन्द गुण वाले तथा अनुपरिमाण जीव का बोधक है।

रामायइतिचतुर्थ्यन्तंस्फुटतरंतत्र चतुर्थीता-

दर्थे नइतिअव्ययं निषेधार्थकं मः इति षष्ठ्यंतं जीववाचकः सोयं नमः शब्दः सखंडाखंडभेदेन द्विविधःद्विविधत्वं तस्यतंत्रेणोपादीयते तत्रस-खंडनमः शब्दउक्तार्थकः अखंडनमः शब्दश्चो-पायवाचीउपायः शरणागतिः।

रामाय यह चतुर्थ्यंत है चतुर्थी तादर्थ में है न यह निषेद्धार्थक अव्यय है मः षठ्यंत है वह जीव वाची हैं नमः शब्द भी सखंड अखंड भेद से दो प्रकार का है। तंत्र से उसका ग्रहण है एकवारके उच्चारण करनेसे बहु अर्थका वोधक तन्त्र कहा जाता है सखंड नमः शब्द का अर्थ कर आये हैं अखंड नमः शब्द उपाय वाची है उपायभी शरणा गति को जानना चाहिये इसमें महाभारत का प्रमाण है।

गच्छध्वमेनंशरणंशरण्यंपुरुषर्षभमितिमार्कं-डेयोपदिष्टशरणपदस्थाने द्रोपद्याः सहिताः सर्वे नमश्चक्रुर्जनार्दनमितिनमःपदप्रयोगात्तदिदंनमो द्वयंमंत्रस्थं काकाक्षिगोलकन्यायेनवीजस्योत्तरं-रामायेत्तस्यपूर्वंद्वयोर्मध्येआनीयसखंडनमःशब्दोर

कारेण सहरायनमः इत्येवमन्वयेवीजस्थहलमकार वाच्योजीवोरायरकारवाच्यायरामायतादार्थत्वे-न रामस्यैवशेषभूतः न मः मकारवाच्यस्यजीवस्य स्वस्यपरस्य च नशेषभूतः इत्यर्थाकत्वेन जीवपर मात्मनोः शेषशेषित्वं स्वरूपंशोधितम् ।

मारकंडेय ऋषिने युधिष्ठिरादिकोंको यह उपदेश दिया कि तुम सब शरणागत रक्षक पुरुषोत्तम भगवान के शरण जावो यह सुनकर द्रौपदी के सहित सबोंने भगवान को नमस्कार किया इससे शरण जाना नमस्कार करनाही सिद्ध हुवा इस प्रकार से सखंड अखंड दोनों नमः काकाक्षिगोलक-न्याय से वीज के उत्तर और रामाय इसके पूर्व उच्चारण करने से सखंड नमः को रकार के साथ राय नमः इस तरह अन्वय होने से यह अर्थ होगा वीजस्थ हल मकार वाच्यजो जीव वह रकार वाच्य श्रीरामजी के लिये है अर्थात उन्हीं का शेषभूत है मः नाम मेरा नहीं अर्थात् मकार वाच्य जीव का शेष नहीं इस तरह अर्थ करने से जीव परमात्माका शेष शेषित्वस्वरूप निश्चित हुआ ।

पुनः नमोनमःइत्युपायवाचिनाखंडनमसासह सखंडनमसोन्वयेन मः मकारवाच्यस्य जीवस्यश्री

रामप्राप्त्युपायोरामएवनान्यइतिनकारार्थःद्विती-यान्वयेनोपाय स्वरूपंशोधितंभवति उपायश्चशर-णागतिरेवेत्युक्तं तच्चसाधानान्तरसंत्यागो इति पञ्चरात्रवचनादेवावगम्यते । अनेनविषयविर-क्तानां श्रीरामैकचिन्तनपराणां श्रीरामशरणागति रुक्ता भगवच्छरणागतैकनिष्ठैः साधनान्तरसंत्याग इतिवचनात् विषयान्तर। निष्ठतामपहायभगव-च्छरणागतिः कार्येतिनिष्कर्षः ।

पुनः नमोनमः इसतरह उपायवाची अखंड नमःशब्द के साथ सखंड नमः का अन्वय करने से मकार वाच्य जीव को श्रीरामजी के प्राप्ति उपाय भूत श्रीरामजी ही हैं दूसरा नहीं यह नकार का अर्थ है इसतरह द्वितीय अन्वयसे उपाय स्वरूप शोधित हुआ । वह उपाय शरणागति है यह पहले कह चुके हैं 'साधनान्तर संत्यागः' इस पंचरात्र के वचन से ही जाना जाता है इससे विषयसे विरक्त होकर श्रीरामजी के चिन्तनमात्र में जोपरायण हैं वेही शरणागति के पूर्ण अधिकारी हैं भगवत शरणागति में एकमात्र निष्ठ होकर सा धनान्तर के भरोसा को त्याग देना यह भगवद्भक्तों का मुख्य कर्तव्य है ।

सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रजेतिभग वद्वचनात् सर्वधर्मत्यागिनां तदेकोपायनिष्ठाना-मेवतच्छरणागतिरुपपद्यते नतुवर्णाश्रमकर्ममात्रै कनिष्ठापराणां तेषांद्रव्याद्यर्जनार्थमनेकोपायत-त्परत्वेणशरणागतेरभावात् ।

सर्व धर्मान्परित्यज्य इस गीता के वचन से सर्व धर्म परित्याग पूर्वक तदेको पाय निष्ठही शरणागतिके अधिकारी हैं केवल वर्णाश्रम कर्मनिष्ठ शरणागति के अधिकारी नहीं हैं क्योंकि उनको द्रव्यादि उपाजनार्थ अनेक उपायमें तत्पर होने से शरणागति होही नहीं सकती हैं ।

श्रीमद्रामायणेशरणागतेः सर्वजनसौलभ्यं दर्शितम् । राक्षसेनविभीषणेन तत्रापि रामशत्रु-रावणभ्रात्राकृतत्वात् शरणागतिविद्यायाः देव मनुष्यादि सर्वेधिकारिणः इतिसूचितम् । आन-यैनं हरिश्रेष्ठदत्तमस्याभयंमया । विभीषणोवा-सुग्रीव यदिवारावणः स्वयमिति श्रीजानकीहतुः स्वपरमशत्रोःरावणस्याप्यभयदानमुक्तमतोरावणं

तुल्यपापिनामपि श्रीरामशरणागतिरूपपन्नतरे-
तिदिक् ।

श्रीमद्रामायण में सर्व जनों को शरणागतिका सौल-
भ्य दिखलाया विभीषण राक्षस हैं तिसपर भी श्रीरामजी के
शत्रुका भ्राता विभीषण को शरण मे ग्रहण किया इससे
देव मनुष्यादि शरणागति के सभी अधिकारी हैं यह सूचित
किया। श्रीरामजी का यह बचन है कि हे हरिश्रेष्ठ तुम इसे
ले आवो मैं इसे अभय दे चुका हूं हे सुग्रीव विभीषण हो
वा रावण हो तुम ले आवो यह कहने से श्रीजनक
राजकिशोरीजी के हरने वाले परम शत्रु रावणको भी अभय
दान कहा इससे रावण तुल्य पापियो को भी श्रीरामजी की
शरणागति कल्याण कर सकती है यह दिग्दर्शन कराया।

रामायनमः इतिस्वस्थानस्थस्य सखंडनम-
सोरामायेत्यनेनान्वयात् वीजस्थ हलमकारवाच्यो
जीवोरामाय रामार्थाय रामकैंकर्यायइतियावत्
मः मम मकारवाच्यस्यजीवस्यस्वस्यपरस्य च कैं-
कर्यायनेत्ययमर्थोनिष्पद्यते अनेन तृतीयान्वयेन
जीवस्य भोग्यंफलंश्रीरामकैंकर्यमेवेतिशोधितम् ।

रामाय नमः यह अपने स्थान में रहने वाले सखंड नमः को रामाय इस पद के साथ अन्वय करने से बीज में रहने वाले हल मकार से वाच्य जो जीव वह रामाय अर्थात् श्रीरामजी के कैंकर्य के लिये है नमः मः नाम मेरा अर्थात् मकार वाच्य जीव के अपने या पराये के कैंकर्य के लिये नहीं है यह अर्थ है इस तृतीय अन्वय से इस जीव का भोग यानी फल श्रीरामजीका कैंकर्यही है यह निश्चित हुआ।

तदेवंसुभूर्ज्योतिर्मय इत्यादिश्रुतिभिः सुप्रकाशज्योतीरूपत्वेन सर्वजगत्कारणत्वेन च जगत्सृष्टिस्थितिप्रलयकर्तॄणां सशक्तिकानांब्रह्मदीनां कारणत्वेनोक्तस्य रकारस्यवाच्योज्योतिस्वरूपः ब्रह्मादिसर्वजगत्कारणभूतःसर्वजीवशेषी श्रीरामएव इतिप्राप्यस्यब्रह्मणोरूपंज्ञेयंज्ञानानन्दस्वरूपो ज्ञानानन्दगुणको अणुपरिमाणो श्रीरामशेषभूतः जीवः इतिप्राप्तुः प्रत्यगात्मनः स्वरूपं ज्ञेयं जीवस्य श्रीरामप्राप्त्युपायः शरणागतिरेवेत्युपायस्वरूपंज्ञेयं।

इस तरह 'सुभर्ज्योतिर्मय' इत्यादि श्रुतियों से स्वप्र-

काश ज्योति रूप से तथा सर्व जगत्कारणत्व से जगत् के सृष्टिस्थिति प्रलय करने वाले शक्ति सहित ब्रह्मादिकों का कारण रेफ कहा गया है तद्वाच्य श्रीरामजी ज्योतिस्वरूप हैं और ब्रह्मादि सर्व जगत के कारण भूत तथा सर्व शेषी हैं वही प्राप्य ब्रह्म हैं इससे प्राप्य का स्वरूप कहा। ज्ञानानन्द स्वरूपज्ञानानन्द गुणक और अणुपरिमाण श्रीरामजीका शेष भूत जीव है इस प्रकार प्राप्ता प्रत्यगात्मा के स्वरूपको जानना चाहिये। जीवको श्रीरामजीके प्राप्तिका उपाय शरणागतिही है यह उपाय का स्वरूप जानना चाहिये।

जीवस्य श्रीरामप्राप्तेःफलंतत्कैंकर्यमिति फल स्वरूपंज्ञातव्यं तथाजीवस्य रामादन्यत्रशेषित्वबुद्धिःपरस्वरूपविरोधिनी रामादन्यस्यस्वशेषत्व बुद्धिः स्वस्वरूपविरोधिनी श्रीरामशरणागतेरन्यत्रोपायबुद्धिः उपायविरोधिनी रामकैंकर्यादन्यत्रफलबुद्धिः फल विरोधिनी तथा जीवहिंसादिप्रवृत्तिः प्राप्तिविरोधिनी इत्येवंपंचार्थाःमंत्रार्थेदर्शिताः ते च मंत्र वित्तमैर्ज्ञातव्या। प्राप्यस्यब्रह्मणोरूपं प्राप्तुश्चप्रत्यगात्मनः। प्राप्त्युपायंफलं-

प्राप्तेः तथाप्राप्तिविरोधिनः। ज्ञातव्य मे तदर्थानांपंचकंमंत्रवित्तमैरिति पंचरात्रेचोक्तम्।

जीव को श्रीरामजी के प्राप्ति का फल श्रीरामजी का कैंकर्यही है यह फल स्वरूप जानना चाहिये। तथा श्रीराम जीसे अन्यत्र देवतांतरों को शेषी समझना यह बुद्धि परस्वरूप विरोधिनी है अपने को श्रीरामजी का शेष छोड कर दुसरे का शेष मानना यह बुद्धि स्वरूप विरोधिनी है श्रीराम जीके शरणागति को छोड कर अन्य उपाय समझना यह बुद्धि उपाय विरोधिनी है श्रीरामजीके कैंकर्यसे अन्यत्र फल बुद्धि फल स्वरूप विरोधिनी है तथा जीव हिंसा काम क्रोध लोभादि ये सब प्राप्ति के विरोधिनी हैं इस प्रकार पांच अर्थ मंत्रार्थ में दिखलाये गये। पंच रात्र में इनका प्रमाण है प्राप्यस्य ब्रह्मणो रूपं इत्यादि से।

इति प्रथमरहस्यार्थः॥

अथ पंचरात्रोक्ताष्टाक्षर शरणागति मंत्रस्यार्थो वर्ण्यते।
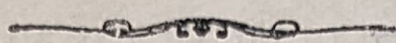
श्रयतेराममितिश्रीः वा श्रावयतिचेतनप्रार्थनामिति श्रीः यद्वाशृणातिहिनस्ति जीवदोषान् इतिश्रीः श्रीयतेजनैरितिश्रीः शृणोतिजीवप्रार्थनामिति श्रीःजानकीतद्युक्तोरामः श्रीरामःमम शरणं रक्षकइत्यर्थः शरणं गृह रक्षित्रोरितिकोशवचनात् शरणशब्दोत्ररामपद समानाधिकरण्येनोक्तः रक्षकार्थः।

अब पंचरात्रोक्त अष्टाक्षर शरणागति मन्त्र का अर्थ वर्णन किया जाता है। श्रीरामजी का आश्रयण करैं उनका नाम श्री वा चेतनों की प्रार्थना को जो श्रवण करावैं उनको कहिये श्री अथवा जीव दोषों का जो विनाश करैं उनका नाम श्री अथवा सब जन जिनका आश्रय लेवैं उनका नाम श्री किम्बा जीवों के प्रार्थना को जो श्रवण करै उनका नाम श्री अर्थात श्रीजानकी जी उनसे युक्त जो राम उनको कही

श्रीराम वे मेरे शरण अर्थात् रक्षक हैं। शरण शब्द गृह और रक्षक का वाचक है इस कोश के वचन प्रमाणसे यहां पर शरण शब्द जो राम पद के समानाधिकरण्य से कहा गया है वह रक्षकार्थक है।

कालमृत्युपर्य्यन्तेभ्योरक्षकः श्रीरामएवराम स्यतादृशशक्तिमत्वात् कालमृत्युपर्य्यन्त्येभ्योपि रक्षांकृत्वामांस्वधामप्रापयित्वात्मप्राप्तिकर्तेत्यर्थः अनेनरामस्यस्वप्राप्त्युपायत्वं शरणागतप्राप्यत्वं च दर्शितम्। तेन शरणागतेः उपायरूपत्वंदर्शितम्। तदुक्तमभियुक्तैः। उपायत्वमुपेयत्वमीश्वरस्यैव यद्भवेत्। शरणागतिरित्युक्ता शास्त्रमानाद्विवेकिमिरिति।

काल मृत्यु पर्य्यन्त से रक्षक श्रीरामहीजी हैं क्योंकि तादृश शक्ति मत्ता उन्हीं की है इससे काल मृत्युपर्य्यन्त सर्व भय से रक्षा कर हमें अपने धाम को प्राप्त कर अपनी प्राप्ति के कर्ता श्रीरामजी ही हैं यह तात्पर्य्य है इससे श्रीराम जीको अपने प्राप्ति के लिये उपाय भूत भी वेही हैं तथा

शरणागति जीवों के प्राप्ति भूत भी वो ही हैं इससे शरणा-
गति शब्द का उपाय उपेय दोनों अर्थ दिखलाया। यह
अभियुक्त लोगों ने कहा भी है। ईश्वर को ही उपेय उपाय
समझना शास्त्र के प्रमाण से विवेकियों ने इसेही शरणागति
कही है।

**सेयं शरणागतिः तवास्मिजानकीकान्त्येव
मादियाचनावद्भिः कृतेन रामायात्मात्मीय समप-
र्णेननिष्पद्यते इति स्पष्टं शरणागति ज्ञापकाः
पंचरात्रश्लोकावदन्ति।**

यह शरणागति तवास्मि जानकी कान्त इत्यादि प्रार्थना
वाले वचनों से किये हुए श्रीरामजीको आत्मा तथा आत्मीय
समर्पण से सिद्ध होती है इसको शरणागति के ज्ञापक पंच
रात्र के श्लोक स्पष्ट रूप से कहते हैं।

**संसारसागरान्नाथौ पुत्रमित्रग्रहाकुलात्।
गोप्तारौ मे दयासिन्धु प्रपन्नभयभजनौ॥
योहं ममास्ति यत्किंचदिहलोके परत्र च।
तत्सर्वंभवतो रेव चरणेषु समर्पितम्॥
अहमस्म्यपराधाना मालयस्त्यक्त साधनः।**

अगतिश्च ततो नाथौ भवन्तावेवमेगती ॥
शरणं वां प्रपन्नोस्मि करुणानिकराकरौ ।
प्रसादं कुरुतां दासे मयिदुष्टेपराधिनि ॥
तवास्मिजानकीकान्त कर्मणामनसागिरा ।
रामकान्ते तवैवास्मि युवामेव गतीमम ॥
मत्समोनास्ति पापात्मा त्वत्समोनास्तिपापहा ।
इति संचित्यदेवेश यथेच्छसि तथा कुरु ॥
अन्यथाहिगतिर्नास्ति भवन्तावेवमेगती ।
तस्मात्कारुण्य भावेन कृपांकुरुदयानिधे ॥
दासोस्मिशेषभूतोस्मि तवैवशरणंगतः ।
पराधितोहं दीनोहं पाहिमां करुणाकर ॥

इतीमेश्लोकाः ।

हे नाथ पुत्र मित्र ग्राहों से संकुल इस सन्सार सागर से आप दोनोही मेरे रक्षक हैं क्योंकि दया-सिंधु और प्रपन्नोंके भय भंजन करने वाले आपही दोनों हैं। जो मैं हूँ तथा इस लोक परलोक में जो कुछ मेरा है उस सब को मैं आपके चरणों में समर्पण करता हूँ। मैं साधन रहित अपराधों का स्थान होने से गति शून्य हूँ अतः आपही मेरे गति

और नाथ हैं हे करुणा समूह के आकर मैं आप दोनों के शरण में प्राप्त हुआ हूं । दुष्ट अपराधी मेरे ऊपर दास जान कर आप कृपा कीजिये । हे श्रीजानकी कांत कर्म मन वाणी से मैं आपका हूं हे श्री रामकांते मैं आपही का हूं आपही दोनों मेरे गति है मेरे समान कोई पापात्मा नहीं है और आपके समान पाप नाशक कोई नहीं है हे देवेश ऐसा विचारकर कर जो इच्छा हो वह कीजिये अन्यथा मेरी गति तो आपही दोनों हैं तस्मात् हे कृपा निधे अपनी करुणा से मेरे ऊपर कृपा कीजिये मैं दास हूँ आपका शेष भूत हूँ और आपही के शरण में प्राप्त हूं हे करुणाकर अपराधी होने पर भी दीन होकर आपके शरण आया हूं इससे मेरी रक्षा कीजिये। इस तरह ये शरणागति के श्लोक हैं ।

पुत्र मित्रग्रहाकुलादित्यनेनैहिक विषयवैराग्यमुक्तम् संसारसागरात् गोप्तारावित्यनेन गोप्तृत्वर्णनेन संसारान्मुक्तिर्याचिता । प्रपन्नभयभंजनावित्यनेनाभयप्रदानत्वं ज्ञापितम् । योहंममास्ति यत्किंचदिति श्लोकेनात्मात्मीयसमर्पण करणमुक्तम् । अहमस्म्यपराधानामालय इत्येनेनशरणागतेः स्वरूपमुक्तम् । तदुक्तमभियुक्तैः । स्वापरा-

धोक्ति पूर्वंयत्स्वात्मसात्वस्य प्रार्थनं स्वरूपं शरणापत्ते रित्युक्तंसात्वतैः खलु ।

तहां पर 'पुत्र मित्र ग्रहा कुलात्' यह कहने से सांसारिक विषयों से वैराग्य कहा 'संसार सागरात्र गोप्तारौ' इससे गोप्तृत्व वर्णन कर संसार से मुक्ति की याचनाकी। 'प्रपन्न भय भञ्जनौ' इससे अभय प्रदान जनाया। 'योहंममास्ति यत्किंचित्' इससे आत्मा आत्मीय का समर्पण किया। 'अहमस्म्यपराधानामालयः' इससे शरणागति का स्वरूप कहा। तत्वज्ञ पुरुषों ने इसीको शरणागति कहा है अपने अपराधों को कहकर आत्म समर्पण करना मुझे अपने आधीन कीजिये इस तरह की प्रार्थना भक्तोंकी इसीको शरणागति कहा है।

प्रपन्नोस्मीत्यनेनात्मनस्तच्छरणागतत्वज्ञापनपूर्वक तत्प्रसादोयाचितः । तवास्मिजानकीकांतेत्यादिना युवामेवगती ममेत्यनेन चात्मनस्तदीयत्वज्ञापन पूर्वकंतदेक गतिकत्वमुक्तम् ।मत्समोनास्ति पापात्मेत्यनेनात्मनोत्यंतपापित्वंपरमात्मनोत्यं तपापविनाशकत्व मुक्त्वाआत्मपरमात्मनोर-

क्ष्यरक्षकत्वं बोधितम्। अन्यथाहिगतिर्नास्तीत्य-
नेन गत्यंतररहितत्वेना किंचनत्वं भवन्तावेवमे
गतीत्यनेनश्रीसीतारामैक गतित्वंचज्ञापयित्वा
तत्कृपादृष्टि याचनमुक्तम्। दासोस्मिशेषभूतोस्मी
त्यादिनाजीवात्मनः अनादितईश्वरशेषतैकरसस्व-
रूपत्वंप्रकाशितम्। इदानीमपितवैव शेषो नदेवता
न्तरस्येत्वेवकारार्थः।

'प्रपन्नोस्मि' इससे अपने को तच्छरणागतत्व पूर्वक तत्प्रसाद याचना की 'तवास्मि जानकी कांत' इत्यादि से तथा 'युवामेवगतीमम' इससे अपने को तदीयत्व ज्ञापन पूर्वक तदेक गति वाला जनाया। 'मत्समोनास्तिपापत्मा' इससे अपने को अत्यन्न पापात्मा और परमात्मा को अत्यन्त पापविनाशकत्व कहकर आत्मपरमात्मा का रक्ष्य रक्षकत्व सम्बन्ध जनाया। 'अन्यथाहिगतिर्नास्ति' यह कह कर अपने को गत्यन्यर रहित अकिंचनवतलाया। आपही मेरे गति हैं यह कहने से जीव की गती श्रीसीतारामजीही हैं यह जनाया। और उनके कृपा दृष्टि की यांचन भी की 'दासोस्मि इत्यादि कह कर जीवात्मा का अनादि काल से भगव-

च्छेषतैक रस स्वरूपता जनाई । इस काल में भी आपकाही हूं यह एवकार का अर्थ है ।

तवैव शरणांगतोहं अपराधितोहमनादित-स्तवदासः शेषश्चाहंसंसारिदशायां तव दास्यंपरि त्यज्य अन्यस्यदास्यंकृत्वात्वदपराधवानहं तदप-राधंस्मृत्वादीनोहं तदपराधविनाशकमुपायान्तर मदृष्ट्वादीनोभूत्वा हे करुणाकरममापराधमपश्यन् केवलया करुणायामांरक्ष संसारसागरादुद्धरेति त्वांप्रति याचनपरोहं मांस्वशरणागतबुद्ध्या संसारात्निस्सार्य्य मांस्वात्मानं प्रापयेतिशरणा-गति श्लोकानांतात्पर्य्यार्थः ।

आपही के शरण मैं प्राप्त हूँ तथा अपराधी हूं इससे यह जनाया कि यह जीव अनादितः आपही का दास तथा शेष है पर संसार दशा में पडकर आपके दासत्व को परि-त्याग कर दूसरे का दास बन रहा हूं यह मेरा अपराध हैं जिसको स्मरण कर मैं दीन होकर उस अपराध के विनाश करने वाला दूसरे उपाय को न देख कर आपके शरण आया हूं । मेरे अपराधों को न देखकर केवल करुणा से मेरी रक्षा

कीजिये। संसार सागर से मेरा उद्धार कीजिये। इस तरह यांचना करते हुए मुझे शरणागत समझकर संसारसे निकाल आपनी प्राप्ति कराइये। यह शरणागति श्लोकों का तात्पर्य्य है।

तमिममर्थंविज्ञाय श्रीसीतारामयोरग्रदेशे-स्थित्वाएतत् श्लोकपठनद्वारा तच्चरणेष्वात्मानमा-त्मीयंच समर्प्यतच्छरणागतो भूत्वानिर्भरोनिर्भय-श्चसन् यावज्जीवंतत्सेवांकुर्वन् तन्नाम तद्गुणा दिस्मरणेन कालक्षेपं कृत्वादेहान्ते श्रीसीताराम-योःकृपया तत्परंपदंप्राप्यतौ साक्षात्पश्यन्ताभ्यां सह तद्वृत्त सत्यसंकल्यादिनाप्राप्तान्सर्वान्कामित भोगान्भुक्त्वातयोर्निरति शयानन्दमयीं लीला मनुभवन् नन्देदितिसंक्षेपेण श्रीरामशरणागति मंत्रस्यार्थ।

इस तरह इस अर्थ को जानकर श्रीसीतारामजी के सामने स्थिर होकर इन श्लोकों को पढते हुए श्रीसीताराम जी के चरणों में अपने आत्माको तथा अपनी समस्त वस्तुओं

को समर्पण कर उनके शरणागत हो निर्भर तथा निर्भय हो कर जीवनपर्यन्त श्रीसीतारामजी की सेवा करते हुए तथा तन्नाम गुणादि के स्मरण से कालक्षेप कर देह के अन्तमें श्रीसीतारामजी की कृपा से उनके परधाम में प्राप्त होकर श्री सीतारामजी के साक्षात् दर्शन करते हुए उनके सहित उन्हीं के दिये हुए सत्य संकल्पादिगुण द्वारा प्राप्त समस्त उनके प्रसाद भूत भोगों को भोगते हुए उनकी आनन्दमयी लीला का अनुभव करते हुए यह जीवात्मा परम आनन्द को प्राप्त होता है यह सङ्क्षेपतः श्रीरामजीके शरणागति मंत्रका अर्थ है।

अथ शरणागति मंत्रार्थप्रकाशकस्य सकृदेवप्रपन्नायेत्यस्यचरम मंत्रस्यार्थो निरूप्यते।

सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिच याचते।
अभयं सर्वभूभ्तेयो ददाम्येतद्व्रतंममेति॥

अब शरणागति मंत्र के अर्थ का प्रकाशकसकृदेव प्रपन्नाय इस चरम मन्त्रका निरूपण करते हैं। मंत्र का मूलार्थ यह है कि एक वार भी मैं आपका हूं इस तरह यांचा करते हुए प्रपन्न के लिये मैं सर्व भूतों से अभय देता हुं यह मेरा व्रत है।

सकृत्एकवारमेव अनावृत्तिलक्षणां प्रपत्तिं कृतवतेऽधिकारिणेउपायान्तरेष्वावृत्तिः शास्त्रार्थः आवृत्तिर सकृदुपदेशादितिसूत्रात् प्रपत्तौत्वना-वृत्तिः शास्त्रार्थः यथा सकृतगृहीत हस्तायाः स्व-स्त्रियः तत्पतिः योगक्षेमं च करोति तथा स्वशर-णागताय,प्रपन्नायसकृदेवाभयं दत्वारामः ऐहिक मामुष्मिकंच तद्योगक्षेमंकरोतीत्यर्थः प्रपन्नाय ममशरणं गृहं वासस्थानमागताय प्रकर्षेन पन्नः प्राप्तः प्रपन्नः वद्धांजलि पुटत्वेन चेति प्रकर्षेण पन्नः शरण्यशरणं गृहं तद्वासस्थानमापन्नः आ-गतोयः सप्रपन्नः।

'सकृत्' एक वारही अनावृत्ति लक्षणप्रपत्ति करनेवाले अधिकारी को । अन्य उपायों मैं वारंवार करनेकी आवश्य कता है क्योंकि व्यासजीका सूत्रही है कि उपासनाकी आवृत्ति कई वार करना चाहिये। पर प्रपत्ति विद्या में अनावृत्ति है अर्थात् वार वार करने का प्रयोजन नहीं हैं एक वारही करने का तात्पर्य्य शास्त्र में है जैसे एक वार स्त्री हाथ को ग्रहण कर उसका पति योग क्षेम को करता है तिसी तरह अपने

शरणागति में आये हुए पुरुष को श्रीरामजी एक बारही अभय देकर उसके लौकिक पारलौकिक योग क्षेम को करते हैं। 'प्रपन्नाय' मेरे शरण अर्थात् गृह अथवा वासस्थान को प्राप्त हुए प्रपन्न के लिये प्रकर्ष से जो प्राप्त हो उसको कहीं प्रपन्न। बद्धांजलि पुट तथा दीन होकर शरण्य के गृह अथवा वासस्थान को जो प्राप्त हुआ हो वह प्रपन्न है यह निरुक्ति है

'गम्लृगतौ' पदगताविति द्वयोरपिधात्वोरेकार्थ कत्वाच्चशरणागतशब्द प्रपन्नशब्दयोरेकार्थ कत्वावगमात्। शरणागतशब्दस्यतु श्रूयतेहिकपोतेन शत्रुः शरणमागत इति। सहितंप्रतिजग्राह भार्याहर्तारमागतमिति। शरणांगृहमागतंस्वगृहं वासस्थानं आगतंप्राप्तमिति तथा याचंतंशरणागतं शरणमागतमित्येवमादि वचनप्रमाणात् शरण्यवासभूम्यागमन मात्रार्थकत्वसिद्धेः।

गम्लृगतौ तथा पद गतौ इन धातुओं का एक अर्थ है। इससे शरणागत शब्द और प्रपन्न शब्द का भी एक ही अर्थ है। शरणागत शब्द का श्रीमद्रामायण में 'श्रूयतेहि कपोते न' इस श्लोक से शरणं आगतः इसका अर्थ अपने

गृह में अर्थात् वासस्थान में प्राप्त यही अर्थ होगा तिसी तरह 'याचंतं शरणागतं' इसका भी शरण्य के वास भूमिमें आनाही अर्थ सिद्ध होता है।

प्रपन्न शब्दस्य यथा निरुक्त यर्थाकत्वमेव निष्पद्यते। तस्मैप्रपन्नाय तवास्मीतिच याचते मांरक्षेतिशेषः। अहं तवास्मित्वदीयोस्मीति हेतो र्मां रक्षेतियाचते अत्रबद्धांजलि पुटत्वस्यस्फुटं कायिकधर्मत्वात् शिरः कट्यादिनम्रतानेत्राद्यंग दीनतादर्शनेन तद्दीनत्वस्यनिश्चयात्। शरणामागमनस्यपादयोः कर्मत्वात् प्रपन्नशब्दवाच्यस्य बद्धांजलिपुटादि त्रयस्यापिशरीरधर्मकत्वेन कायिकीप्रपत्तिरुक्ता।

प्रपन्न शब्द को यथा निरुक्ति प्रयुक्त अर्थ होनाही सिद्ध होता है। तिस प्रपन्न के लिये अर्थात् मैं आपका हूं मेरी रक्षा कीजिये इस तरह याचना करते हुए प्रपन्न के लिए यहां पर बद्धांजलि पुट कहने से कायिक धर्म स्पष्ट है। शिरः कटि आदि की नम्रता तथा नेत्रादि अंगोंकी दीनता निश्चित होती है। शरण में आना पाद का कर्म है। प्रपन्न

शब्द वाच्य के वद्धांजलि पुटत्वादि तीनोंही शरीर के धर्म्म हैं अतएव कर्म-रूप होने से प्रपन्नाय यह कायिकी प्रपत्ति कही गई है।

तथा तवास्मि त्वदीयोस्मीति तदीयत्वज्ञानस्यमानसत्वात् तवास्मीत्यनेन मानसी प्रपत्तिरुक्तातथा तवास्मीति हेतोमांरक्षेतियाचतेइत्यनेन वाचिकीप्रपत्तिरुक्तेति। कायिकीवाचकी मानसीति त्रिविधाप्रपत्तिः प्रपन्नायतवास्मीतियाचते इत्यनेनबोधिता। तत्र लोकेक्वचित् वद्धांजलिपुटत्व दीनत्व याचन रहितमपि पुरुषं स्वशत्रुभयात् स्वशरणंगृहमागतं शरण्योगृही तच्छत्रुभयात् रक्षति।

तथा तवास्मि मैं आपका हूं यह तदीयत्व ज्ञान मन का धर्म है इस कारण तवास्मि यह मानसी प्रपत्ति जानना चाहिये। मैं आपका हूं, मेरी रक्षा कीजिये इस यांचासे वाचकी प्रपत्ति कही गई तस्मात् कायिकी वाचकी मानसी तीन प्रकार की प्रपत्ति 'प्रपन्नाय याचते तवास्मि' इससे कही गई। कहींपर वद्धांजलि पुट दीनता रहित भी पुरुष को शत्रु के भय से

अपने शरण अर्थात गृह में आये हुए को शरण्य जो गृही उसकी शत्रु भय से रक्षा करता है।

क्वचित्तु शरण्यगृहात् दूरदेशस्थमपि भोदेवदत्तायंमांहन्तुमागतः एतस्मान्मां रक्षेतिकेवल याचमानाय शरण्यस्तत्रगत्वातं तच्छत्रुभयात् रक्षतीति शरणागमनात्मक याचनात्मकयोर्द्वयोः प्रपत्योः परस्परं निरपेक्षेण स्वतन्त्रत्वेन फलदातृत्वज्ञापनाय प्रपन्नायेत्यस्मात् याचतेइत्यस्यप्रथकृत्योक्तिः तत्रकण्डुवाक्ये वद्धांजलिपुटत्वं दीनत्वं विनानुपपद्यमानमर्थापत्यादीनत्व मुपपादयति। दीनत्वंचापि वद्धांजलि पुटत्वंविनानुपपद्यमानमर्थात् वद्धांजलिपुटत्वमुपपादयतीत्यतो द्वयोरेकतरपदोपादानेनद्वयोरपिपदयोरर्थस्यसिद्धे द्वयोरपिपदयोरुपादानं किमर्थमितिचेत्।

कहीं पर शरण्य के घरसे दूर देश में भी हे देवदत्त यह मुझे मार रहा है इससे मेरी रक्षा कीजिये इस तरह केवल याचना करने पर ही शरण्य वहां पर जा कर उसकी

उस शत्रु से रक्षा करता है। इससे शरणमें आना तथा याचना करना इन दोनों प्रपत्तियों को परस्पर निरपेक्ष हो स्वतंत्र रूप से फल दातृत्व जनाने के लिये 'प्रपन्नाय' इससे 'याचिते' इसको पृथक् करके कहा तहांपर कराडु महर्षि के वाक्य में बद्धांजलि होना दीनता के विना नहीं हो सकता है। इस अर्थापत्ति से हाथ जोड़ना ही दीनता को जना रहा है इसी तरह दीन जो होगा वह विना हाथ जोड़े न रहेगा। इससे दीन होना यह बद्धांजलि पुटत्व को कह रहा है। दोनों में से किसी में से एक पद ग्रहण करने से ही दोनों के अर्थकी सिद्धि है फिर 'बद्धांजलि पुटं' और 'दीनं' यह किस लिये कहा यह यदि शंका करो तो

अनधीतन्यायशास्त्राणांअर्थापत्त्यनभिज्ञानां बद्धांजलि पुटत्व दीनत्वयोर्द्वयोरपि प्रपत्त्यंगत्व ज्ञापनायद्वयोरप्युपादानं कृतमितिज्ञेयम्। तथापि बद्धांजलिपुटः सन् दीनश्च सन् किमर्थमागत इति शंकानिवृत्तये शरणागतमित्युक्तम्। तथा सन् शरण्यशरणांगमिष्यतीत्यर्थः।'तवास्मि'मांशत्रुभयात् संसारभयाद्वारक्षेत्येवं याचिष्यतीत्यर्थः शरणा-गतमित्युक्ते केनप्रकारेण शरणमागतः शरणमा-

गत्यच किंकरिष्यतीति सन्देहनिवृत्त्यर्थंवद्धांजलि पुटंदीनं याचन्त मित्युक्तम्। वद्धांजलिपुटत्वदीन त्वप्रकारेण शरणामागतः शरणामागत्य शरण्यंप्रति मांरक्षेतियाचिष्यतीत्यर्थः।

शंका का उत्तर यह है कि जिन्होंने न्याय शास्त्र को न पढ़ कर अर्थापत्ति को नहीं जाना उनके लिये वद्धांजलि पुटत्व तथा दीनत्व इन दोनों पदों को प्रपत्तिका अंग जनाने के लिये दोनों पदों को ग्रहण किया। जैसे कि वद्धांजलि पुट होकर दीन होकर क्या करैगा इस शंका के निवृत्ति के लिये 'शरणागतं' यह कहा गया। हाथ जोड़ कर दीन होकर शरणा के शरण में आवेगा तथा शरण में आकर क्या करेगा इस सन्देह निवृत्ति के लिये 'याचन्तं' यह कहा अर्थात् मैं आप का हूं। शत्रुभय से वा संसारभय से मेरी रक्षा कीजिये। इस तरह शरण में आकर याचना केरगा फिरभी शरण में किस प्रकार से आया, आकर क्या करेगा इस सन्देह के निवारणार्थ 'वद्धांजलिपुटं दीनं याचन्त' यह कहा गया। अर्थात हाथ जोड़ कर दीन होकर, इस प्रकार से शरण में आया और मेरी रक्षा करैं यह याचना किया।

सैषा सांगाशरणागतिः श्रीरामेण 'सकृदेव प्रपन्नायतवास्मीति चयाचते' इत्यर्द्ध श्लोकेनोक्ता। एवं भूताय प्रपन्नाय सर्व भूतेभ्यः कालमृत्युपर्य्य-न्तेभ्योऽभयदानमुक्तम्। 'अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतंममेति' उक्तप्रकारेण शरणागतायकाल मृत्यु पर्य्यन्तेभ्योभयंददामीति श्रीरामशक्तेः स्व शरणागतरक्षणात्वोपपत्तेः तेन चस्वस्य सर्वस्य-वशीसर्वस्ये शानेत्यादि श्रुति समुदायबोधित सर्व शक्तिमत्व परब्रह्मत्व बोधनम्।

सो यह अंग के सहित शरणागति 'सकृदेवप्रपन्नाय तवास्मीति चयाचते' इस आधे श्लोक से श्री राम जी ने कही इस प्रकार के प्रपन्न को सर्व भूतों से अर्थात काल मृत्यु पर्य्यन्त भय देने वाले सबोंसे अभय देता हूं यह मेरा व्रत है। उक्त प्रकार से शरण में आये हुये प्रपन्न के लिये सर्व भूतों से अभय दान कहने से श्रीरामजी की शक्ति अपने शरण में आए हुए पुरुषों को रक्षा करने वाली है इस से 'सर्वस्य वशी सर्वस्ये शानः,' इत्यादि श्रुति समुदाय बोधित सर्वशक्तिमत्व रूप अपना परब्रह्मत्व बोधन किया।

अभयमिति भयाभावं यत्र तत्स्वपदं मुक्त गम्यं स्वंपरंधामददामि । अथ सोभयंगतोभवतीति श्रुतेरभयपदस्य मोक्षार्थकत्वावगमात् ददामीतिवर्तमान कालीन क्रियापदेन वर्तमानस्यैव देहस्यान्ते तस्मैशरणागताय स्वंपरंपदंददामीति ज्ञापितंभवति। अत्र संसारसागरान्मोक्षं ददामीत्येतावदुक्त्यैवोक्तार्थसिद्धेः स्फुटार्थमिमंपरित्यज्य शत्रुभयाभाव परस्यसंसार भयाभाव परस्येति संदिग्धार्थस्याभयपदस्य ऐहिक शत्र्वादि कालादि शत्रुवोधकस्यचोपादानेसकामायनिष्कामाय सर्वस्मै अभयं दत्वातत्तादभीष्टंच ददामीत्युक्तम्।

अभय नाम भय का अभाव है जिस में इस प्रकार का अपना परंपद मुक्ति गम्य परधाम देता हूं 'ददामि' यह वर्तमान कालीन क्रिया पद से वर्तमान देह के अन्त में तिस शरणागत को अपना परम पद देता हूं यह जनाया। यहां पर संसार सागर से मोक्ष देता हूं यह कहने सेही उक्त अर्थ की सिद्धि होजाती है इस स्पष्ट अर्थ वाले शब्द को छोड़

करके भयका अभाव अथवा संसार भय का अभाव ये दोनों हीका बोधक वा ऐहिक शत्रु सर्प व्याघ्रादि और पारलौकिक जो कालादिशत्रु दोनोंके बोधक अभय पदके देनेसे सकाम अथवा निष्काम दोनों कोही शरणागति आने से अभय देना दिखलाया।

तत्र सकामेभ्यः स्वशरणागतेभ्यस्तत्तत् शत्रुभ्योऽभयंदत्वा तत्तदभीष्टमर्थं कामादिकंददामि निःकामेभ्यः स्वशरणागतेभ्यो गर्भजन्मजरामरणादि महादुःख हेतुभ्यस्तदनादिकालार्जित वर्तमानभविष्यत्संचिद्भ्योपुण्यपापेभ्यः मृत्युकालयमादिभ्यश्च अभयं भयाभावस्थानं ब्रह्मलोकाख्यं स्वपरंधामददामीति ज्ञापयित्वा सकामैरकामैर्निष्कामैरात्मकामैर्मत्प्राप्तिकामैः सर्वैरप्यर्थधर्मकाम मोक्षाख्य पुरुषार्थ चतुष्टयकामैः शरणागतिः कार्य्येतिफलितार्थः।

तहां पर सकाम शरणागतों को लौकिक शत्रुओं से अभय देकर उनके अभीष्ट को पूरण करता हूं तथा निष्काम शरणागतों को गर्भ, जन्म, जरा, मरणादि महादुःखों से

तथा उनके अनादि कालार्जित वर्तमान, भविष्यत संचित पुण्य पापों से तथा मृत्यु काल यमादिकोंसे अभय अर्थात् भयाभावस्थान ब्रह्मलोक पदवाच्य अपना परंपद देता हूं यह जनाकर सूचित किया कि सकाम अकाम निष्काम आत्म-काम अथवा भगवत प्राप्ति काम वाले सबों को अर्थ धर्म काम मोक्षाख्यपुरुषार्थ चतुष्टय कामना वालों को शरणा-गति ही एक मात्र करना चाहिये।

एतद्व्रतं इत्यनेन कस्याचिदपि दशायां परित्यागानर्हत्वं सूचितम्। 'ममेति' परब्रह्मशब्द-वाच्यस्यावाप्तसमस्तकामस्य संकल्पमात्रेणाशेष-जगत्सृष्टिस्थिति संहारकर्तुः भक्तिवशाच्छवर्य्या-दिभक्तसमर्पित फलादिभोक्तुः भक्तिपारवश्येनैव श्रीदशरथपुत्रत्वेनाविर्भूय तदाज्ञयावनेवनेविच-रणपरस्यसर्वलोक सर्वभूतशरण्यस्येति ममव्रतस्य अनादित्व निर्वाधित्वम् अनेनभगवदेकाश्रयत्वेन तत्तसाधानानुष्ठानंविनैव पुरुषार्थचतुष्टयावाप्ति-रुक्ता। यथा च महाभारते। यावैसाधनसम्पत्तिः

पुरुषार्थचतुष्टये । तया विनातदाप्नोति नरोनारा-
यणाश्रित इति ।

यह मेरा व्रत है यह कहने से किसी दशा में इसका त्याग नहीं होसकता है यह जनाया । 'मम' अर्थात परब्रह्म शब्दवाच्य अवाप्त समस्त काम सत्यसंकल्पसंकल्प मात्रहीसे जगत्सृष्टि,।स्थति संहार करने वाले भक्तिवश शबरी आदि भक्तों के फलादि भोगने वाले तथा भक्ति परवश होकर श्री चक्रवर्ति पुत्र होकर उनकी आज्ञा से बन बन में बिचरते हुए सर्व लोक,सर्व भूत शरराय मेरा यह अनादि व्रत है इस से व्रत को अनादित्व और निर्वाधत्व दिखलाया । इससे भगवान के आश्रय करने से ही तत्तत्साधन के बिना फल चतुष्टय की प्राप्ति होती है यह जनाया । जैसे कि महा-भारत में कहा है कि पुरुषार्थ चतुष्टय के लिये जो साधन सम्पत्ति कही गई है उसके बिना ही भगवदाश्रित पुरुष पुरुषार्थ चतुष्टय को प्राप्त होसकता है।

अनेन स्वस्वरूप परस्वरूप याथार्थ्यविदो-
पिलक्षणांज्ञापितम् । यद्यप्यत्रशरणागतिप्रकरणे
ईदृशस्यज्ञानिनोनप्रसंगः तथापिसंसारजलनिधे-
र्मुक्तिर्नस्वतंत्रा अपितु रामाधीनैव रामेणैवदी-

यते इत्यतस्तवास्मीत्यस्य याथात्म्यप्रकाशनपर-त्वमुक्तम् इत्येवंतच्चरणारविन्देष्वात्मात्मीयनिक्षे-पेण निर्भरोभूत्वा स्वांगीकारंप्रार्थयित्वा चानन्तर मभयप्रदौतद्धस्तौ स्वशिरसिनिहितौस्मृत्वा तेन तद्दत्ताभयोस्मीतिनिर्भयोभूत्वापश्चादुत्थायसर्व दातत्तत्कालोचित भगवत्कैंकर्य्यैकपरोभवेत्। भगवच्छेषत्वस्य भागवच्छेषत्वपर्य्यन्तत्वात्। ममसद्भक्तभक्तेषुप्रीतिरभ्यधिकायतः। अर्चयित्वा तु गोविन्दं तदीयान्नार्चयन्तिये। नतेविष्णुप्रसा-दस्य भाजनंदाम्भिकाजनः। इत्यादौभागवता-र्चनंविना भगवदर्चकस्य दांभिकत्ववर्णनेन भगवत्कैंकर्य्यस्यापि भागवत्कैंकर्य्यपर्य्यन्तत्वनि-ष्पत्तेरवश्यं भागवत्कैंकर्य्य परो भवेदिति।

इस कथन से स्व स्वरूप तथा परस्वरूप के यथार्थ वेत्तावों के लक्षण भी कहे गये। यद्यपि इस शरणागति प्रकरण में ईदृश ज्ञानी का स्पष्ट रूप से प्रसंग नहीं है त-थापि इस संसार समुद्र से मुक्ति को स्वातंत्र्य नहीं है क्यों-

कि वह मुक्ति श्रीरामजी के आधीन है, श्रीरामजी ही उसके दाता हैं इस कारण 'तवास्मि' इस पद को याथात्म्यप्रकाशन परत्व कहा गया है अर्थात मैं ज्ञानानन्द गुणक ज्ञानानन्द स्वरूप आप का धार्य्य तथा शेषत्वादि लक्षण विशिष्ट हूं। आपही मेरे रक्षक हैं। इस तरह प्रभु के चरणारबिन्दों में अपने आत्मा को तथा आत्मीयपदार्थ को समर्पण कर स्वयं निर्भर होकर अपने अंगीकारकी प्रार्थना करै। इस तरह शरणागत होकर भगवन्मन्दिरादिकों में नित्यशः प्रणाम करते समय यह बिचार करै कि भगवान के अभयप्रद हस्त मेरे शिर पर हैं। इस तरह स्मरण कर यह भी बिचारै कि मुझे भगवान ने अभय कर दिया। पश्चात् उठकर सर्वदा समय समय के उचित भगवत्कैंकर्य्य में परायण हो उनके कृपा से आनन्द होकर रहै। यह भी एक बिचारने योग्य है कि भगवान का शेष होना यह भागवत शेष पर्य्यन्त है, अर्थात् भगवद्भागवत दोनों का ही शेष अपने को समझै। भगवान का बचन है कि मेरे और मेरे भक्तों में जिसकी प्रीति अधिक है वही मेरा भक्त है। और भी ऋषियों का बचन है कि जो भगवान की पूजा करते हैं और भागवतों की पूजा नहीं करते वे भगवान के प्रसाद के भाजन नहीं होते हैं किन्तु एक तरह दाम्भिक हैं, इत्यादि बचनों से भा-

गवतों के पूजन बिना केवल भगवान की पूजा करने वालों को दम्भी सुना जाता है। इससे भगवत्कैंकर्य्य भी भागवत कैंकर्य्य पर्य्यन्त ही माना गया है, इससे भागवत कैंकर्य्य परायण होना यह परमावश्यक है।

एवं चेदं रहस्यत्रयं परमार्थभूतं परममंगलायनं परमश्रेयोमोक्षसाधकमनन्यत्वेन भगवन्निष्ठैःसर्वोपायशून्यैः प्रपत्तितत्परैः श्रीरामसमुत्कंठैर्जन्ममरणात्मक संसारभयनिवृत्तिकाङ्क्षिभिरतंद्रितैः श्रीरामोपासकैर्वैष्णवैरहर्न्निशमनुष्ठेयमितिशम्।

इति श्रीमदग्रस्वामि परम्पराश्रितेन श्रीमद्रामप्रसादवंशोद्भवेन श्रीहरिदासेन सम्पादितं रहस्यत्रयभाष्यं समाप्तम्।

इस तरह परमार्थभूत परम मंगल का स्थान सर्व श्रेष्ठ श्रेय शब्द वाच्य मोक्ष का एक मात्र साधक यह रहस्यत्रय है। इसका अनन्य भगवन्निष्ठ, सर्वोपाय शून्य होकर केवल प्रपत्ति में ही जो तत्पर होरहे हैं तथा श्रीरामजी के मिलने की जिन्हे अति उत्कंठा होरही है और जन्म मरण रूप संसार की निवृत्ति को चाह रहे हैं ऐसे उत्तमाधिकारी, निरालस, श्रीरामोपासक, वैष्णवों को दिन रात अनुष्ठान करना चाहिए अर्थात् इन तीनों रहस्यों को अर्थानुसंधान पूर्वक

जप करना चाहिए तात्पर्य यह है कि नित्य यथा समय षडक्षर श्रीराम मंत्र का जप तथा शरणागति मंत्र एवं चरममंत्र का उच्चारण पूर्वक अर्थ को मनन करते रहना चाहिए ।

इति श्रीमद्योगानन्द वंशोद्भवेन पं० रामवल्लभाशरणे[illegible]
सम्पादिता रहस्यत्रयभाष्यदीपिका
समाप्ता ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१९	८	स्वै	स्वे
२४	११	न्यनंय	न्ययनं
३२	११	रघोकुलः	रघो ःकुले
४१	१०	सुभ्	स्वभू
४२	१	स्वभूज्यो	स्वभूर्ज्यो
४२	८	स्वैनैव	स्वेनैव
४३	१४	स्पुः	स्युः
४४	७	व्रह्मादि	व्रह्मादि
४४	८	व्रंहण	बृंहण
४४	१६	व्रह्मा	व्रह्मा
४७	१०	ब्रंहण	बृंहण
४७	१८	ब्रंहण	बृंहण
४८	१२	करणनातरं	करणानन्तरं
४६	३	विद्युद्भिः	विद्वद्भिः
५०	६	सोत्पत्ति	स्योत्पत्ति
५२	६	जगद्यु	जगदु
५२	११	दशरथे	दशरथ
५६	१४	संक्ष्यप्य	संक्षिप्य
५३	१०	वान्मित्यु	वानित्यु
४६	१४	नाराज्ञा	नराज्ञा
४६	१५	नाराज्ञा	नराज्ञा
५६	६	पूत्वक्रम	पूत्क्रम
,,	१०	निषधंन्न	निष्पन्नतरम्
,,	१३	तन्त्य	तत्प्र
६१	४	व्यावस्थि	व्यवस्थि
६३	५	तच्छेश	तच्छेष
६४	१५	ज्ञानाथः	ज्ञानार्थः

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
,,	१७	इत्यहितस्य	इत्यवहितस्य
६५	१८	भवन	भुवन
६६	२	रफे	रेफ
६९	७	ररूप	स्वरूप
७२	७	व्यातप्य	व्याप्य
	१७	रामधीनप्रवत्ते	रामाधीनप्रवृत्ते
[illegible]	१८	छांदोग्ये	छान्दोग्ये
	४	श्रोत्रणि	श्रोत्राणि
७५	२	त्येतत्प्रव	त्येतत्तत्वतःप्रव
७७	६	आप्राप्त	अप्राप्त
७७	१४	रामएइतय	रामएवेत्यतो
७८	११	आप्राप्त	अप्राप्त
७८	३	कोपायत्येन	कोपायत्वेन
७९	६	चतुर्थावदिति	चतुर्थीवदति
७९	१०	नादर्थे	तादर्थे
८४	११	परीक्ष	परीक्ष्य
८६	१०	व्रंहण	वृंहण
८८	१	निवसन	निवेशन
८८	१४	स्यततद्वापक	स्यतद्व्याप
८८	१४	रामार्थंक्त्व	रामार्थकत्व
८८	१८	तदव्यापक	तद्व्याप्यत्वेन
८९	१	तदुद्रूप	तद्रूप
९१	८	वैशिष्ठाको	वैशिष्ट्यको
९२	१	परमात्मनौ	परमात्मनो
९२	१८	तदवाह	तद्वाद
९६	८	अनुष्ठय	अनुष्ठेय
,,	१६	उक्तअर्ज	उक्तअर्थ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९९	१५	श्रीरमता	श्रीरामता
१००	११	पूर्वाचार्यैः	पूर्वाचार्यैः
१०२	१८	रामायेतस्य	रामायेत्यस्य
१०५	५	तत्परत्वेण	तत्परत्वे
,,	६	उपाजनार्थ	उपार्जन
,,	१६	जानकीहतुः	जानकीहतु
१०७	८	सुभूर्ज्यौति	स्वभूर्ज्यौति
,,	१०	व्रह्मदीना	व्रह्मादीनां
,,	१४	गुनकोक्रणु	गुणक्रोणु.
,,	,,	परिमाणो	परिमाणः
,,	१८	सुभर्ज्यौ	स्वभूर्ज्यौ
१०८	१३	रन्यत्रोपाप	रन्यत्रोपाय
१०९	,,	प्राष्पस्य	प्राप्यस्य
१११	६	पर्य्यन्त्ये	पर्य्यन्ते
१११	१२	द्विवेकिमि	द्विवेकिभि
११४	१७	यत् किंचदिति	यत्किंचिद्दिति
११४	१८	नासालयः	नामालयः
११६	११	पापत्मा	पापात्मा
,,	१२	अत्पन्त	अत्यन्त
,,	१५	गत्पन्यर	गत्यन्तर
११७	१०	मर्ां	मां
११८	११	संकल्या	संकल्पा
,,	१४	मंत्रस्पार्थ	मंत्रार्थः
११९	१३	भूभतेयो	भूतेभ्यो
,,	,,	स्येनद्धतं	स्येतद्धृतं
१२०	८	प्रकषेन	प्रकर्षेण
,,	१२	लणप्रय०	लक्षणाप्रय